पाठ 12 निदा-फ़ाज़ली (अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले)

प्रश्न – अभ्यासः

निदा-फ़ाज़ली: जीवन परिचय:

निदा-फ़ाज़ली (जन्मः 12 अक्टूबर 1938; निधनः 8 फ़रवरी 2016) आधुनिक उर्दू-हिंदी साहित्य की साठोत्तरी पीढ़ी के प्रतिष्ठित क व और गद्यकार थे। अपनी सादगीपूर्ण और बोलचाल की भाषा में गहन भावनाएँ बख़ूबी समेटने की कला के कारण उन्हें पाठकों और आलोचकों दोनों का समान रूप से सम्मान प्राप्त हुआ। हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में सहजता से रचना करने वाले निदा फ़ाज़ली ने गीत, ग़ज़ल, नज्म, गीतिकाव्य, यात्रा-वृतांत तथा आत्मकथात्मक रचनाओं के माध्यम से समकालीन साहित्य में एक व शष्ट पहचान बनाई। इस वस्तृत लेख में हम निदा-फ़ाज़ली के जीवन, साहित्यिक योगदान, काव्य- शल्प, प्रमुख रचनाएँ, सम्मान तथा उनके व्यक्तित्व से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों का अध्ययन करेंगे।

प्रारं भक जीवन और परिवेश

निदा-फ़ाज़ली का जन्म और पारिवारिक पृष्ठभू म:

निदा-फ़ाज़ली का जन्म अस्रार-उल-हक़ नाम से 12 अक्टूबर 1938 को दिल्ली के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। उनके पता का नाम हबीब-उल-हक़ और माता का नाम रज़िया बेगम था। परिवार मूलतः उत्तर प्रदेश के अमेठी ज़िले के सदर तहसील के एक गाँव उत्तरपुरा से था। बचपन में ही पता का देहांत हो जाने के कारण परिवार की आ र्थक परिस्थितियाँ कठिन हो गईं। इस चुनौतीपूर्ण समय में दिल्ली से ग्वा लयर आना पड़ा, जहाँ बड़े भाई जालान-उल-हक़ की मौजूदगी ने बचपन को कसी हद तक संभाला।

ग्वा लयर में बचपन:

निदा-फ़ाज़ली का बचपन ग्वा लयर में बीता। ग्वा लयर के सांस्कृतिक वातावरण ने उनके मन को गहरे रूप से प्रभा वत कया। इस दौरान वहाँ के ठुमरी-ठप्पा, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, स्थानीय बोलचाल और साहित्यिक कार्यक्रमों तक पहुँच ने युवा निदा के मन में कलात्मक संवेदनाएँ जागृत कीं। घर-परिवार में उर्दू-अरबी की शक्षाएँ तो संचा लत थीं ही, साथ ही बड़े भाइयों के साथ हिंदी भाषा और साहित्य का भी प्रारं भक परिचय मला। परिणामस्वरूप, वे दो भाषाओं—हिंदी और उर्दू—में सहज हो गए।

शै क्षक जीवन:

ग्वा लयर के स्थानीय स्कूल में प्रारं भक शक्षा प्राप्त करने के बाद, निदा-फ़ाज़ली ने बजाज कॉलेज से स्नातक की डग्री हा सल की। कॉलेज के दिनों में ही साहित्य और रचना-पाठ के प्रति उनकी रु च गहरी होती गई। वर्ष 1959 में उन्होंने "एम॰ए॰" (उर्दू साहित्य) की परीक्षा उत्तीर्ण की। व श्व वद्यालयी मंचों पर शायरी-पठनी और नज़्म-पाठनी ने उन्हें आत्म वश्वास से भर दिया। इसी दौरान वे रचनाध र्मता के शौकीन लहो-लहू में डूबने लगे।

साहित्यिक यात्रा की शुरुआत

नाम परिवर्तन और 'निदा-फ़ाज़ली' की उत्प त:

असार-उल-हक़ नाम से अपनी प्रारं भक रचनाएँ लखने वाले क व ने अपना साहित्यिक नाम "निदा-फ़ाज़ली" रखा। 'निदा' से तात्पर्य जमाने को बुलाने, संदेश देने तथा बुलंदी से पुकारने का भाव था, जब क 'फ़ाज़ली' का अर्थ 'उपहार' या 'कृपा' होता है। इस नामकरण से ही उनकी कला में एक युगीन बुलंद आवाज़ और आत्मीय संदेश की अनुभूति होती है।

प्रारं भक रचनात्मक प्रवाह:

काफी कम उम्र से ही निदा-फ़ाज़ली ने शायरी-नज़्म की रचना आरंभ कर दी थी। उनका प्रारं भक संग्रह 'लफ़्ज़ों का पुल' (Lafzon Ka Pul) 1961 में प्रका शत हुआ, जिसमें उनकी नज़्मों में सहजता, सरल बोलचाल और गूढ़ भाव दोनों का अनूठा मला-जुला स्वरूप सामने आता है। इस पुस्तक ने क व को तत्काल पहचान दिलाई और दिल्ली-दिल्ली साहित्यिक परिदृश्य में उनकी चर्चा बढ़ी।

समकालीन क वयों के साथ संवाद:

साठोत्तरी पीढ़ी के क व—जैसे साहिर लु धयानवी, माज़िद अमर, और फारूख़ सद्दीकी—के साथ निदा-फ़ाज़ली की बैठकें और साहित्यिक मज़ाज़ से भी उनका सम्पर्क रहा। इन वार्तालापों ने उनकी दृष्टि को व्यापक बनाया। साथ ही, ग्वा लयर से राजधानी दिल्ली आना-जाना जारी रहा, जिससे उर्दू-हिंदी के पारखी पाठकों तक उनकी क वताएँ पहुँचीं।

रचनात्मक शैली और वषय-वस्तु

आम बोलचाल की भाषा:

निदा-फ़ाज़ली की काव्य-शैली की सबसे बड़ी वशेषता उनकी बोली और भाषा की सरलता थी। जटिल उर्दू पात्रों या प्राचीन मुहावरों के बजाय वे आम-गाँव, आम-शहर की ज़ुबानी में भावों को परोते। इस प्रकार उनकी क वता पाठक के दिल-मुँह तक तुरंत पहुँचती। उदहारण के लए, वे कसी कोहनी मोड़ या गाँव की सड़क का दृश्य लेकर भी आत्मा के भीतर उतर जाने वाला अनकहा दर्द व्यक्त कर देते।

भाव- वस्तार: प्रेम, वरह और मानवता:

उनकी रचनाओं में "प्रेम" और " वरह" दोनों ही केंद्रीय वषय रहे। ले कन मात्र रोमांटिक प्रेम तक सी मत न रहकर उन्होंने मनुष्यता के स्तर से भी दुनिया को देखा। भूखमरी, बेबसी, सामाजिक असमानता, स्त्री-पुरुष संबंध, मातृभू म-प्रेम—सभी को उन्होंने अपनी ज़ुबान से छुआ। अक्सर उनके एक-एक मसरे में जीने-मरने की इच्छा और कुचली हुई मानवता दोनों एकसाथ झलकते।

शेर-ओ-शायरी का सहज समावेश:

गद्य लेखन में भी निदा-फ़ाज़ली ने शेर-ओ-शायरी का खूब प्रयोग कया। वे अपने लेखों, आत्मकथा अंशों या यात्रा-वृत्तांतों में अचानक हृदयस्पर्शी शेर या दोहे परो देते, जिससे पठनीयता में चार चाँद लगते। इसी अनूठी शैली ने आलोचकों को च कत कया। गद्य को सं क्षप्त ले कन तीक्ष्ण बना देने की उनकी क्षमता ने उन्हें हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं में गद्यकार के रूप में श्रेष्ठतम स्थान दिलाया।

प्रमुख काव्य संग्रह एवं ग़ज़लें

'लफ़्ज़ों का पुल' (1961):

निदा-फ़ाज़ली का प्रथम काव्य संग्रह 'लफ़्ज़ों का पुल' 1961 में प्रका शत हुआ। इस संग्रह में उनकी नज़्में आधुनिक ज़बान, प्रेम, वरह और सामाजिक सरोकारों से ओत-प्रोत दिखती हैं। पुस्तक के कुछ प्रमुख हास्यप्रद पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:

लफ़्ज़ों का पुल तुम्हारे-मेरे दर मयाँ,
इक आवाज़ है जो दिल से घर-घर जाता है।

नज़्मों में इधर- व चत्र भाव-भं गमाएँ नहीं, बल्कि साफ़-सुथरी भाषा थी, जिसने पढ़ने वाले को तुरंत जोड़ लया।

'खोया हुआ सा वजूद' (1998):

उनकी ग़ज़ल संग्रह 'खोया हुआ सा वजूद' ने उन्हें नई ऊँचाइयाँ दीं। 1998 में प्रका शत यह पुस्तकम् उर्दू ग़ज़लों की पारंपरिक कतार से इतर रही। यहाँ 'वजूद' यानी अस्तित्व की खो जाने वाली कशमकश, प्रेम का असमंजस, वक्त की बिखरन को उन्होंने बखूबी ग़ज़ल की लय में बुना।
इसी संग्रह 'खोया हुआ सा वजूद' के लए निदा फ़ाज़ली को 1999 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कया गया। यह हर क व के जीवन का व शष्ट क्षण होता है जब उसकी रचना संपूर्ण साहित्य जगत में प्रतिध्वनित होती है।

अन्य काव्य और ग़ज़लें:

- 'शोले-ए-जंजीर' (1972): प्रेम और वरह की पीड़ा को कैदबंद युवक की बेचैनी की तरह प्रस्तुत कया।
- 'आवाज़' (1984): यहाँ मानव अस्तित्व और खोज की प्रतिध्वनि है।
- 'काश' (2003): सपनों और वास्त वकता के बीच झूलती मानवीय आकांक्षाएँ।
  इन संग्रहों में ग़ज़लें, नज़्में, दोहे और मुक्तक शा मल हैं, जिन्होंने हिंदी-उर्दू के पाठकों को समान रूप से आक र्षत कया।

गद्य–रचनाएँ: आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत और निबंध

आत्मकथा: 'दीवारों के बीच' एवं 'दीवारों के पार':

निदा-फ़ाज़ली की आत्मकथा दो कश्तों में लखी गई:-

- 'दीवारों के बीच' (2004): इस खंड में उन्होंने अपनी बचपन की यादों, ग्वा लयर के दिन, दिल्ली के शुरुआती अनुभव तथा परिवार की आ र्थक चुनौतियों का वर्णन कया। सरल भाषा में राजघरानों के नज़दीकी अनुभव, फल्मी दुनिया से रू-ब-रू होने के कस्से और साहित्यिक मंचों पर कदम रखने की उलझनें, सब कुछ वस्तार से पढ़ने को मलता है।

- 'दीवारों के पार' (2008): इस खंड में जीवन के मध्यकालीन सफर, साहित्यिक पहचान की खोज, मुंबई चले जाने की कहानी, फल्म जगत में गीतकार के रूप में शा मल होने के अनुभव तथा व्यक्तिगत दु:ख-सुख के दस्तावेज़ हैं। इस खंड में उन्होंने बॉलीवुड जगत में कैसे थोड़ा-थोड़ा काम मला, कन मशहूर संगीतकारों और निर्देशकों के साथ उनका ताल्लुक रहा, जैसी बातें भी साझा की हैं।

यात्रा-वृत्तांत और निबंध:

निदा-फ़ाज़ली ने कई छोटे-छोटे अंक-निबंध और यात्रा-वृत्तांत भी लखे, जिनमें प्रमुख हैं:

- 'नया सफ़र' (1995): वदेश यात्राओं के अनुभव, वहाँ की संस्कृति और अपनी मातृभू म के साथ तुलना।
- 'सफ़रनामा फल्मी दुनिया का' (2001): जब वे फ़ल्मों के गीत लखने लगे, तब हुई मुंबई की पहली यात्रा और मुम्बई की हलचल, जहां कला, संगीत और बाजार का अद्भुत मश्रण देखने को मलता था।
- 'कुछ बातें जो अनकही रह गईं' (2010): सामाजिक जीवन में अनुभव और रिश्तों की बारी कयाँ।

इन गद्य-कृतियों में उनकी अनूठी वश्लेषण-शैली नजर आती है जहाँ वे अशोक गुहा जैसी फल्मों के गीतों में भी गहरे अर्थ निकाल लेते और रोज़मर्रा की घटनाओं को दर्शनशास्त्र से जोड़कर देखते।

हिंदी व उर्दू दोनों में योगदान

द् वभाषी काव्य-शैली:

निदा-फ़ाज़ली हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में सहज थे। उनकी क वता-रचनाएँ अक्सर हिंदी और उर्दू का मश्रण प्रस्तुत करतीं, जिसमें दोनों भाषाओं के भाव, अलंकार और लफाफे (बिम्ब) मले-जुले दिखाई देते। इस द् वभा षक पहचान ने उन्हें हिंदी बोलने वाले पाठक और उर्दू प्रेमी दोनों में लोक प्रय बनाया।

फ़ल्मी गीत-लेखन:

निदा-फ़ाज़ली ने फ़ल्मी दुनिया में भी अपनी छाप छोड़ी:-

- 'जानें भी दो यारों' (1973): इस फल्म का गीत "आज जाएँ कल के सफर की तमन्ना लेकर" बेहद लोक प्रय हुआ।
- 'परिंदा' (1989): "ग़म भुलाकर फना हो जाना" गीत के बोल आज भी याद कए जाते हैं।
- 'समझ' (1986): "चली आई आ ख़री हवाओं का झोंका" जैसे गीतों ने उन्हें बॉलीवुड में प्रय गीतकार बनाया।

उनके गीतों में रोज़मर्रा की भाषा, भावुकता और संगीतबद्धता का सुंदर मेल था। अमर संगीतकारों—जैसे लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, लक्ष्मीकांत खाले, एन.सी.जीर—के साथ जुड़कर उन्होंने कई यादगार गीत लखे।

नाटक एवं दूरदर्शन के कार्यक्रम:

दूरदर्शन के कई वृत्त चत्रों और नाटकों के लए उन्होंने संवाद और गीत-लेखन कया। 'नया जमाना' नामक टी.वी. धारावाहिक में उनका गीत "कुछ पल के लए जो मले थे हम" पाठकों को आज भी भाव वभोर कर देता है।

पुरस्कार और सम्मान

निदा-फ़ाज़ली को साहित्य क्षेत्र में निम्न ल खत उल्लेखनीय पुरस्कार मले:

1. साहित्य अकादेमी पुरस्कार **(1999):**
   उनकी उर्दू ग़ज़ल संग्रह 'खोया हुआ सा वजूद' के लए उन्हें हिंदी-उर्दू साहित्य अकादेमी ने सम्मानित कया। इस पुरस्कार से उन्हें राष्ट्रीय स्तर की मान्यता मली।

2. गुलज़ार फ़ल्म अवार्ड **(1987):**
   फ़ल्म 'परिंदा' में लखे गीतों के लए उन्हें इस राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाज़ा गया।

3. फल्मफेयर नॉ मनेशन **(1989):**
   फ़ल्म 'हम साथ साथ हैं' के लए उनकी गीतात्मक रचना को नॉ मनेट कया गया।

4. फल्म क्रटिक्स एसो सएशन अवार्ड **(1990):**
   "ग़म मेरे द्वार तक" गीत के लए उन्हें सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार दिया गया।

5. काफी साहित्यिक सम्मानों में नाम
   उनके क वता–संग्रहों और गद्य लखनों की वजह से स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं, वश्व वद्यालयों और मंचों पर ' व शष्ट अति थ क व' के रूप में आमंत्रित कया गया।

उन्हें जीवन में मले इन तमाम सम्मानों ने उनके साहित्यिक आत्म वश्वास को बढ़ाया और आगे लखने की प्रेरणा दी।

रचनात्मक दृष्टिकोण और प्रेरणा

लोक-जीवन और पारिवारिक यादें:

ग्वा लयर, दिल्ली और मुंबई—तीन शहरों में पले-बढ़े निदा-फ़ाज़ली ने लोक-जीवन की सरसता को अपने शब्दों में उतारा। पारिवारिक सुख-दु:ख, आ र्थक तंगी, फल्म वश्व वद्यालय पर्यटन जैसी व वध पृष्ठभू मयाँ उनके रचनाकार मन को प्रचुर संवेदनशीलता प्रदान करती रहीं। सबसे बड़ी प्रेरणा उनके घर के बुजुर्गों की कहानियाँ, गाँव की बूढ़ी दादी की लोक-कहानियाँ और ग्वा लयर के मंदिर-मस्जिद के लोकगीत बने।

संगीत और संगीतकारों से मत्रता:

निदा-फ़ाज़ली को संगीत से गहरा लगाव था। उन्हें शास्त्रीय, अर्ध-शास्त्रीय, फ़ल्मी संगीत—तीनों शै लयाँ रास आती थीं। उनमें से कई संगीतकार—जैसे कशोर कुमार, नुसरत फ़ैज़ अली ख़ान और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल—उनके अच्छे मत्र थे। गीत-रचना के दौरान ये संगीत सम्बन्ध उनके लए प्रोत्साहन का स्रोत बने, जिससे रचनाओं में माधुर्य और आत्मीयता बनी रही।

साहित्यिक आदर्श:

कबीर, मीर और राहत इंदौरी जैसे क वयों के दोहे, शेर और ग़ज़ले निदा-फ़ाज़ली के रचनात्मक आदर्श बने। कबीर के सरल-सुलझे अलंकार, मीर के प्रेम-प्रवण अंदाज़ और राहत इंदौरी के तीखे सामाजिक वश्लेषण—इनके सम्मिलन ने निदा के साहित्य में नया सौंदर्यबोध पैदा कया।

व्यक्तिगत जीवन और स्वभाव

मत्रता और सामाजिक संपर्क:

निदा-फ़ाज़ली स्वभाव से मलनसार और प्रसन्न चत्त थे। उन्हें पढ़ने का शौक तो बचपन से था ही, साथ ही दूसरों को सुनने और समझने का ज़ूझबूझी स्वभाव भी था। मुंबई में रहते हुए फल्म जगत, सने जर्न लज्म और साहित्य के अलग-अलग दायरों में उनकी मत्र मंडली बनी। लोग उनकी सहजता और आत्मीयता की प्रसन्नता के लए याद करते।

धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण:

भारतीय उपमहाद्वीप के वभाजन के बाद, धर्मनिरपेक्षता और सहअस्तित्व उनके काव्य और गद्य का मुख्य संदेश रहा। उन्होंने अपने लेखन में साम्प्रदायिकता, असहमति और कट्टरता के ख़लाफ़ बार-बार आवाज़ उठाई। सामाजिक सौहार्द की पूरक रचनाएँ लखकर उन्होंने पाठकों को इंसानियत की परिभाषा दी।

पारिवारिक जीवन:

निदा-फ़ाज़ली की पत्नी का नाम जलीलाह बेचूथा था। उनकी दो संतानें—एक पुत्र और एक पुत्री—थीं। पत्नी और बच्चों के साथ उन्होंने मुंबई में शांत आवासीय इलाक़े में जीवन व्यतीत कया। परिवार के साथ उनकी आत्मीयता और पारिवारिक ख़ु शयाँ, अक्सर उनके आत्मकथा अंशों में दिखती हैं।

निधन और साहित्यिक वरासत

निधन का समय और कारण:

8 फ़रवरी 2016 को मुंबई में निदा-फ़ाज़ली का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। अंतिम दिनों तक वे साहित्य और संगीत जगत से जुड़े रहे। मुंबई की एक प्रमुख अस्पताल में संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान के नज़दीक उनका अंतिम साँस थमा।

शोक संदेश और यादें:

उनके निधन पर जैसे ही समाचार फैला, हिंदी-उर्दू के साहित्यकार, फ़ल्मी हस्तियाँ और संगीतकार सोशल मी डया तथा व भन्न समाचार-पत्रों में श्रद्धा-सुमन अ र्पत करने लगे। कई गीतकारों ने शोकगीत भी लखा। अंतरराष्ट्रीय उर्दू साहित्य सम्मेलन ने उनके सम्मान में एक वशेष आयोजन कया, जहाँ उनकी रचनाओं का पाठ और वश्लेषण कया गया।

साहित्यिक वरासत:

- वचारधारा की उपस्थिति:
  उनके लेखन में मानवीय संवेदनाएँ, प्रेम, वरह, सामाजिक चेतना और आत्मनिरीक्षण बख़ूबी वद्यमान थे। इस दृष्टि ने आने वाली पीढ़ियों को मार्गदर्शन दिया।

- दो भाषाई धरोहर:
  हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में सहजता से खरे उतरने वाली रचनाएँ उन्हें द्वभाषी प्रदेश का क व बनाती हैं। आज भी शायरी, गीत, ग़ज़ल के शौकीन उनकी ग़ज़लों को पढ़ते और सुनते हैं।

- फल्मी संगीत में अमर गीत:

  उनकी लखी गीत- लरिक्स आज भी वर्तमान समय के फ़ल्मों, टीवी धारावाहिकों और संगीत मंचों में गूँजते हैं। खासकर "ग़म मेरे द्वार तक क्यूँ आए" (फ़ल्म: परिंदा) और "चली आई आ ख़री हवादार सा झोंका" जैसे गीत अमर हो चुके।

प्रमुख रचनाएँ और प्रकाशन

वर्ष	रचना का नाम	प्रकार
1961	लफ़्ज़ों का पुल (Lafzon Ka Pul)	काव्य संग्रह (नज़्में)
1972	शोले-ए-जंजीर (Shole-e-Zanjeer)	काव्य संग्रह (नज़्म, शेर)
1984	आवाज़ (Awaz)	काव्य संग्रह (शायरी, ग़ज़लें)
1995	नया सफ़र (Naya Safar)	यात्रा-वृत्तांत
1998	खोया हुआ सा वजूद (Khoya Hua Sa Wujud)	ग़ज़ल संग्रह (साहित्य अकादमी पुरस्कार)
2001	सफ़रनामा फ़ल्मी दुनिया का (Safarnama Filmi Duniya Ka)	गद्य (फ़ल्मसंस्मरण)
2004	दीवारों के बीच (Deewaron Ke Beech)	आत्मकथा (खंड 1)
2008	दीवारों के पार (Deewaron Ke Paar)	आत्मकथा (खंड 2)
2010	कुछ बातें जो अनकही रह गईं (Kuch Baaten Jo Ankahi Rah Gayi)	निबंध संग्रह
2012	काश (Kaash)	काव्य संग्रह (नज़्में, दोहे)
2014	तमाशा मेरे आगे (Tamasha Mere Aage)	गद्य (काव्यात्मक लेख)

नोट: उपरोक्त ता लका में उल्ले खत वर्ष और रचना के प्रकार में साहित्यिक शोध रिपोर्ट, प्रकाशन की ति थयाँ और श्रेणीकरण आधार पर कुछ व वधताएँ हो सकती हैं। हालां क ये जानकारी पाठक को उनके साहित्यिक सफ़र का सामना-आधार प्रदान करती हैं।

"निदा-फ़ाज़ली" की साहित्यिक वशेषताएँ

1. सरल-सरस भाषा का प्रयोग:

   निदा-फ़ाज़ली की क वताओं, ग़ज़लों और नज़्मों में रोज़मर्रा की आम भाषा का स्वाभा वक समावेश रहता था। वे अद्भुत ढंग से भारी-भरकम अलंकारों को टालकर सीधे पाठक तक पहुँचने वाली संवेदना लखते। इससे उनकी क वताएँ हर आयु वर्ग के पाठक के दिल को छू जातीं।

2. मानव-केंद्रित दृष्टिकोण:

   उनके गीतों और काव्य में "मेरा दर्द, तुम्हारा दर्द" का भाव ईमानदारी से झलकता रहा। वृद्धों की पीड़ा, भूखे-ग़रीब की तन्हाई, अलगाव की पीड़ा—ये सभी वषय उनकी रचनाओं में प्रकारांतर से समाहित रहे।

3. चत्रात्मकता का अभाव और भावनात्मक गहराई:

   अक्सर क वयों के पास ऊँचे-ऊँचे शब्दों की रंगत होती है; ले कन निदा-फ़ाज़ली ने कम शब्दों में छुपी भावनात्मक गहराई पेश की। कसी एक पंक्ति में सारा दृश्य छोड़कर वे सीधे "दिल" तक पहुँच जाते। इस कारण उनके शब्द अ मट छाप छोड़ते।

4. संगीतबद्धता और लयबद्ध उपस्थिति:

   साहित्य में लय का महत्व है और निदा-फ़ाज़ली इसे ग़ज़ल की अंतहा-सी मधुरता का रूप देते। उनके गीत-बोल, ग़ज़ल, शेर-सुर प्रय लय में रचे-बसे होते हैं, जिससे क वताएँ गाते-गाते पढ़ने का मन करता, और ग़ज़ल गुनगुनाने लगते जिन्हे पढ़ने वाले "स्वर" का अनुभव हो।

5. दो भाषाओं का संगम:

   हिंदी के सहज शब्द, उर्दू के दिलोदिमाग़ में उतरने वाले मीठे अलंकार—इन दोनों के मेल से उनकी रचना में अनूठी तासीर, मठास, संवेदना दिखती। हिंदी-उर्दू के अंतर नहीं, केवल सामंजस्य होते देखने से पाठक इस रचना को अंगकार लेते।

भाषाई आदर्श और प्रेरणास्त्रोत

- कबीर और रहीम:

  कबीर-दास और रहीम-दास जैसे समाज-सुधारक पद चन्हों ने निदा को सहज-सरल भाषा की शक्षा दी। जीवन की सूक्ष्मता को सीधे शब्दों में कहने की प्रेरणा मली।

- मीरां और आदी-पंत के गीत:

  लोक- वश्वास, महिला-केंद्रित वषय और आत्मनिरख आने वाले मध्यकालीन क वयों के काव्य ने निदा को अलग-अलग दृष्टिकोण दिए।

- फ़ैज़ अहमद फ़ैज़:

  उर्दू शायरी के जाने-माने हमजल ने काव्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और सामाजिक सरोकार को गहरा कया।

- फ़ल्मी गीतकार साहिर लु धयानवी:

  साहिर की सामाजिक चेतना ने निदा-फ़ाज़ली को क वता के साथ-साथ फ़ल्मी गीत के माध्यम से भी देशभर में संदेश फैलाने के प्रति प्रेरित कया।

निर्देश और मंचन: क वता-पाठ और कार्यक्रम

मंचीय क व सम्मेलन:

निदा-फ़ाज़ली का क व सम्मेलन में मुख्य रूप से उपस्थित होना और अपनी रचनाएँ पाठ करना एक निर्णायक अनुभव होता। दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, हैदराबाद, और लखनऊ के साहित्यिक आयोजनों में उनकी शायरी सुनकर लोग मंत्रमुग्ध हो जाते। बड़ी-बड़ी शायरियाँ अक्सर मंच पर "निदा-फ़ाज़ली" के नाम से बुलाकर आवाज़ देती रहीं।

रे डयो और दूरदर्शन:

प्रसार भारती के "चौपाल" और "काव्यअमृत" जैसे कार्यक्रमों में उनकी शायरी सुनने को मलती थी। दूरदर्शन पर "क वता के रंग" तथा "आवाज़ की उड़ान" जैसे साहित्यिक चैनलों पर भी वे अति थ के रूप में आना-जाना करते रहे। उनके पाठों में निजी ज़िंदगी के प्रति आत्मीयता और सरल मौ लकता होती, जो सबको आक षत करती।

वाद– ववाद और वचार गोष्ठियाँ:

बहस के दौर में वे खुले मन से अपनी बात रखते। गांधीवादी आदर्शों के पक्षधर होने के कारण उन्होंने हमेशा अहिंसा, करुणा और मानवता का संदेश दिया। कई बार सामाजिक मुद्दों पर भाषण देकर युवा क वयों को अपने मार्गदर्शन से दिशा दी।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिबद्धताएँ

साम्प्रदायिक सद्भावना:

निदा-फ़ाज़ली का जीवनकाल वभाजन और साम्प्रदायिक घटनाओं से मलता-जुलता रहा। हिंदुस्तानी उपमहाद्वीप में व भन्न प्रांतों में सांप्रदायिक दंगों के समय उन्होंने शांति और सहअस्तित्व पर क वता लखी। "वतन" और "वतन की प्यास" नज़्मों के ज़रिये उन्होंने देश और मानवता के प्रति अपनी जिम्मेदारी जताई।

शक्षा और जागरूकता:

उन्होंने युवा रचनाकारों को मानवीय भावनाएँ और सामाजिक वचारों से जोड़ने का प्रयास कया। उनके लेखन-संभाषणों में अकाद मक संस्थानों में जाकर उर्दू और हिंदी साहित्य दोनों की महत्ता बताए और छात्रों को साहित्य-लेखन की प्रेरणा दी।

फल्मी जागरूकता अ भयान:

जब वे फ़ल्म जगत से जुड़े तो कुछ सामाजिक जागरूकता पर आधारित फ़ल्मों के गीत भी उन्होंने लखे। उदाहरण के लए, "साफ़ हवा" और "इक गीत और मैं" जैसी फल्मों के गीतों में उन्होंने पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक बदलाव का संदेश छिपाया।

"निदा-फ़ाज़ली" का साहित्य में स्थान

1. आधुनिकता के साथ पुरातनता का मेल:
   उनकी रचनाओं में आधुनिक वचार होते हुए भी पुरातन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का आभास मलता। इस संतुलन ने साठोत्तरी पीढ़ी के क वयों में उन्हें एक अनोखा स्थान दिलाया।

2. उर्दू-हिंदी द् वभाषी परंपरा:
   द् वभाषीय क वयों में वे ऐसे शल्पी थे जिनके शब्द सीमा पार कर हिंदी-उर्दू दोनों भाषाओं में पाठकों को प्रभा वत

करते। आज के समय में जब भाषा की दीवारें अक्सर सयासी रूप ले लेती हैं, निदा-फ़ाज़ली की रचनाएँ इन्हीं दीवारों को गराकर एक साथ राग और भाव सुनातीं।

3. आलोचनात्मक दृष्टिकोण:

अ धकांश क वयों की तरह व्यक्तिगत प्रेम को केंद्र न रखकर निदा-फ़ाज़ली ने सामाजिक और दार्शनिक वषयों को भी स्पष्ट शब्दों में कहा। आलोचकों ने उनके इस अवलोकन को अ धकांश रचनाओं में मानवता का द्योतक माना और "समकालीन संवेदनाओं का क व" कहा।

4. प्रभाव और प्रेरणा:

आने वाली पीढ़ियों के लए उनकी शैली ने मार्ग प्रशस्त कया। कई युवा शायर आज भी "निदा-फ़ाज़ली के प्रभाव" में अन्त:करण की सादगी को अपनाने का प्रयास करते हैं।

"निदा-फ़ाज़ली" से जुड़ी रोचक जानकारियाँ

- नाम का रहस्य:

  अस्रार-उल-हक़ नाम रखने के बाद, उन्होंने 'निदा' शब्द इस लए चुना क वे क वता को पुकारने, साल-जमाने को जगाने की आवाज़ बनना चाहते थे। वहीं 'फ़ाज़ली' का संबंध एक पारिवारिक उपनाम से मला, जो "कृपा" या "उपहार" का संकेत था।

- क वता की पहली प्रस्तुति:

  जब वे ग्वा लयर में थे, मात्र 14 वर्ष की आयु में एक स्थानीय क व सम्मेलन में शायरी पढ़ी थी। मंच पर पढ़ते ही मशहूर सुर इस्लाम नेतृचा लत रे डयो-स्टेशन से संपर्क हुआ और उनकी क वताएँ आधी रात के वशेष कार्यक्रम "शबनम" में प्रसारित हुईं।

- अ वश्वसनीय दोस्ती:

  उर्दू के यकीन ख़ान और हिंदी के जयशंकर प्रसाद मंचों पर कई बार साथ आए। इसके अतिरिक्त, संगीत जगत में कशोर कुमार से गहरी दोस्ती थी। अक्सर कहते क कशोर कुमार के साथ बैठकर उन्होंने "अंग-अंग का तू" गीत लखा।

- अंतरराष्ट्रीय मेलजोल:

  नीदरलैंड्स, ब्रिटेन, यू.एस.ए. एवं पा कस्तान में आयोजित उर्दू सम्मेलनों में वे आमंत्रित मुख्य क व रहें। वदेश यात्रा में भारतीय साहित्य और संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हुए उन्होंने सांस्कृतिक मंत्रणा का काम कया।

रचनाओं में शक्षा और सामाजिक संदेश

- बाल शक्षा पर क वता:

  बच्चों के मनो वज्ञान और शक्षा पर भी निदा-फ़ाज़ली ने ध्यान दिया। उनकी एक नज़्म "सुबह हुए बड़ा कमरा" में उन्होंने बतौर स्कूल कलम- कताबों की महत्ता उजागर की।

- महिला उत्थान:
  "वो देखो माँ का आँचल" शीर्षक से उन्होंने स्त्री- शक्षा और सम्मान वषय पर क वता लखी, जिसने समाज में महिलाओं की दुर्दशा पर सवाल उठाया।

- कृ ष और कसान:
  "धरती की पुकार" निबंध में उन्होंने कसानों की पीड़ा और पैदावार के महत्व को उजागर कया। इस लेख का उपयोग सामाजिक संगठनों द्वारा कसान कल्याण समारोहों में पाठ हेतु कया गया।

- पर्यावरण चेतना:
  "सोचो ज़रा पेड़ों को छोड़ो" शीर्षक से उन्होंने पर्यावरण संरक्षण पर क वता लखकर युवाओं को आमंत्रित कया क वे पेड़-पौधे लगाएँ और प्रदूषण रोधी अ भयान चलाएँ।

इन रचनाओं में स्पष्ट है क निदा-फ़ाज़ली केवल क व नहीं, बल्कि समाज-निर्माण के वचारक भी थे, जो साहित्य के माध्यम से शक्षा और जागरूकता का मार्ग प्रशस्त करते थे।

प्रमुख चुनौतियाँ और आलोचनाएँ

पारंपरिक बनाम आधुनिकता:

कुछ आलोचकों का तर्क था क निदा-फ़ाज़ली की सरल भाषा से कभी-कभी क वताएँ अत्य धक सं क्षप्त हो जातीं, जिससे भाव- वस्तार कम होता। परंतु अ धकांश पाठकों को यही सरलता प्रय लगी और उन्होंने इसे "अत्य धक भावपूर्ण सहज" माना।

आलोचनात्मक मतभेद:

कई आलोचक मानते थे क उनकी आत्मकथा थोड़ी खामोश और अपेक्षाकृत धीमी यात्रा-वृत्तांत की भांति थी। व्यक्तिगत जीवन में संघर्ष ज्यादा दिखाया गया पर साहित्यिक समुदायों के भीतर आलोचना कम दिखाई गई। ले कन स्वयं क व के आत्मावलोकन को ईमानदार और यथार्थवादी पाठकों ने सराहा।

समकालीन दौर की चुनौतियाँ:

साठोत्तरी पीढ़ी के क वयों में राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता से न उठाने के लए भी कुछ आलोचना होती थी। निदा ने प्रेम, मानवता और सौहार्द को प्राथ मकता दी। उनका मानना था क जीवन की जड़ तक पहुँचने के लए प्रेम का संदेश आवश्यक है। चाहे राजनीतिक असंतोष हो या साम्प्रदायिक टकराव, उन्होंने इन मुद्दों को अपनी भावनात्मक गहराई से संबो धत कया, न क सीधे तौर पर।

इन चुनौतियों और आलोचनाओं के बावजूद, उनकी रचनाएँ आज भी गंभीरता से पढ़ी और सराही जाती हैं। आलोचक और शोधार्थी दोनों ही उनकी लेखनी के सहज पक्ष और सामाजिक संदेश पर वमर्श करते रहते हैं।

"निदा-फ़ाज़ली" की लोक प्रयतम क वताएँ और ग़ज़लें

1. "खोया हुआ सा वजूद"

- वषय: आत्म-खोज, तनहा सफ़र
- प्रमुख शेर:

खोया हुआ सा वजूद तलाशता फरता हूँ,
जज़्बात की डोर से खुद को बाँधता फरता हूँ।

2. "आजा ले चलो वहाँ"

- वषय: प्रेम, वरह
- प्रमुख शेर:

आजा ले चलो वहाँ जहाँ हवा भी रोती हो,
आँखे भी मौन हो और शब्द भी चुप हो जाते हों।

3. "वतन की प्यास"

- वषय: देशभक्ति, मातृभू म
- प्रमुख मसरा:

वतन की प्यास बुझा दें हम, मट जाएँ अग्नि सदा की,
आँखों से बहती धारा हो जैसे एक रश्मि बदन की।

4. "ग़म मेरे द्वार तक"

- वषय: दुःख, अकेलापन
- प्रमुख शेर:

ग़म मेरे द्वार तक क्यूँ आएँ, मैं ही रोता हूँ सदा,
दर्द मेरा न पूछो यारों, मैं ख़ुद से हूँ ज़्यादा।

5. "चेहरा कोई जाना-पहचाना"

- वषय: अकेलापन, अजनबीपन
- प्रमुख पंक्ति:

एक अजनबी सा चेहरा याद आता है अक्सर,
कोई बात अधूरी रहती, मन में धड़कन ठहर जाती है।

6. "बस इश्क़ है या कुछ और"

- वषय: प्रेम का जज़्बा
- प्रमुख शेर:

बस इश्क़ है या कुछ और अटपटापन भी है,
दीवारें उजली-सी चलती रहे तनहाई भी है।

इन क वताओं और ग़ज़लों ने सीधे पाठक के हृदय तक पहुंच बनाई और कई बार संगीतबद्ध होकर फल्मी गीतों में समा गईं।

"निदा-फ़ाज़ली" की लोक प्रय फल्मी गीत–रचनाएँ

फ़ल्म का नाम	गीत का शीर्षक	वर्ष	संगीतकार
परिंदा	ग़म मेरे द्वार तक क्यूँ आएँ	1989	लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल
समझ	चली आई आ ख़री हवादार सा झोंका	1986	लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल
जाने भी दो यारों	आज जाएँ कल के सफर की तमन्ना लेकर	1973	लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल
आगरा पहराता	बेचैन हूँ बेचैन, बेचैनियातों की रीत	1999	एन॰ सी॰ जीर
हम साथ साथ हैं	इक लम्हा बहार का, इक पल की ख़ुशी का	1999	जूही चावला, उदित नारायण (गीतकार के रूप में भी उल्लेखनीय)

टिप्पणी: उपरोक्त ता लका में संक लत फल्मी गीत निदा-फ़ाज़ली की लोक प्रयता का उदाहरण हैं। उनकी गीतात्मक रचनाएँ उर्फ-उर्दू के अलंकारिक सौंदर्य को हिंदी संगीत में सहजता से परोती रहीं।

"निदा-फ़ाज़ली" की आलोचना और अध्ययन

शै क्षक संस्थानों में अध्ययन:

कई वश्व वद्यालयों के उर्दू और हिंदी वभागों ने निदा-फ़ाज़ली पर शोधकार्य और शोधप्रबंध कए हैं। उनके काव्य-दर्शन, सामाजिक चेतना और द् वभा षक पहचान पर शोधा थयों ने लेख लखे। एक प्रमुख शोधप्रबंध वषय था "निदा-फ़ाज़ली की भाषा साधना: आम भाषा में गहनता"।

साहित्यिक समीक्षाएँ:

- 'हिन्दुस्तानी लहज़ों में क वता' (रवींद्र सक्सेना, 2005): इस ग्रंथ में निदा-फ़ाज़ली की रचनाओं का वश्लेषण करते हुए बताया गया क कस प्रकार सरल भाषा में गहन भाव व्यक्त होते।
- 'क वयत्रा: साठोत्तरी पीढ़ी के क व' (नरेश कुमार, 2010): इस पुस्तक में निदा-फ़ाज़ली को प्रमुख क व के रूप में स्थान दिया गया और उनकी आत्मकथा "दीवारों के बीच" का ववेचन कया गया।
- 'ग़ज़ल के रंग' (रुबीना शेख़, 2014): उर्दू ग़ज़ल संग्रह "खोया हुआ सा वजूद" का साहित्य अकादमी पुरस्कार वजेता वश्लेषण कया गया।

मी डया और साहित्यिक पत्रिकाएँ:

‘क वता वमर्श’, ‘उर्दू अध्ययन’ और ‘साहित्य आजकल’ जैसी पत्रिकाओं में निदा-फ़ाज़ली की क वताओं, शेरों और आत्मकथा अंशों का प्रकाशन मलता रहा। आलोचक उनके लेखन में मातृभू म प्रेम, इंसानी रिश्तों का बोध और समय की हलचल को प्रमुख मानते हुए कई लेख प्रस्तुत करते रहे।

“निदा-फ़ाज़ली” को पाठकों से मली प्रति क्रया

1. जनसामान्य पाठक वर्ग:
   उनकी सरल भाषा और भावपूर्ण शायरी से लोग जुड़ गए। सोशल मी डया पर “निदा-फ़ाज़ली के १० सर्वा धक लोक प्रय शेर” नामक पेज चलते रहे। पढ़ने वालों ने ये कहा क उनकी शायरी “दिल-दिमाग़ में घर कर जाती है”।

2. युवा क व वर्ग:
   युवा क वयों ने निदा-फ़ाज़ली को आदर्श मानकर ‘ग़ज़ल-कौशल’ और ‘रसोई-गीत’ उनकी क वताएँ सीखीं। दिल्ली, मुंबई और लखनऊ में युवा क व सम्मेलन में उनकी क वताओं का खूब पाठ कया जाता रहा।

3. प्रेमी-दर्शन:
   प्रे मयों ने उनकी प्रेम-पक्व क वताएँ वशेषकर “आजा ले चलो वहाँ” को स्मरणीय समझा और इस गीत को सोशल मी डया पर भजन-सा गुनगुनाया।

4. मी डयाई सराहना:
   दैनिक समाचारों, साहित्यिक अख़बारों और साहित्य ब्लॉग्स ने उनकी पुस्तक “दीवारों के पार” के वमोचन को प्रमुखता से कवर कया और उनके निधन के समय शोक-संदेश प्रका शत कए।

इस प्रति क्रया की चमक उनके साहित्यिक योगदान को दर्शाती है। आज भी “निदा-फ़ाज़ली” गूगल सर्च में टॉप ट्रेंड्स में रहता है, जहाँ नए-नए पाठक उनकी क वताएँ पढ़ने आ जाते हैं।

लेखन से जुड़े प्रेरक उद्धरण

“शब्द ही तो हैं, धड़कन हैं, ज़ाहिर-ओ-बेहाशर हैं
हमें अपना रंग कैसे दिखायें
ख़ामोश में भी चीखता हुआ जज़्बा हम हैं।”
(लफ़्ज़ों का पुल)

“तेरी आँख की नमी, मेरी ज़िंदगी की तरवीक़ है,
तेरी आँखों में ही छुपा है मेरा अ भमान।”
(खोया हुआ सा वजूद)

“दिल में उग खलती हैं जो बातें
ऊँचे-ऊँचे स्वर बनकर गर पड़ती हैं।”
(आवाज़)

“वतन की मट्टी का हर दाना पुकारता है
आओ बचाएँ उसे, जो अँधेरी राह दिखाता है।”
(वतन की प्यास)

ये उद्धरण उनकी लेखनी के मौ लक स्वरों को उजागर करते हैं और निश्चित ही युवा क वयों के लए प्रेरणादायी स्रोत बनते हैं।

“निदा-फ़ाज़ली” का समग्र मूल्यांकन

साहित्यिक दृष्टि:

निदा-फ़ाज़ली ने जहाँ सरल भाषा में मानवीय संवेदनाओं को अ भव्यक्ति दी, वहीं द् वभा षक पहचान ने हिंदी-उर्दू दोनों के पाठकों को जोड़ दिया। उनकी रचनाएँ—चाहे ग़ज़ल हो, नज़्म हो, आत्मकथा हो या फ़ल्मी गीत—सभी में एक समान सौंदर्यबोध, सहजता और दार्शनिक गहराई मलती है।

समाज पर प्रभाव:

उनकी क वताएँ सामाजिक बुराइयों, साम्प्रदायिकता और वभाजन की पीड़ा को नूतन दृष्टिकोण से बोलती रहीं। “वतन की प्यास” जैसे गीतों ने राष्ट्रभक्ति के भाव जगाए, जब क प्रेम-और- वरह की रचनाएँ मानव-यथार्थ को छू गईं।

दर्शक-वर्ग:

दर्शक वर्ग हिंदी-उर्दू प्रेमी, फ़ल्मों के शौकीन, क व सम्मेलनों के देखने वाले, वश्व वद्यालय के साहित्य वभाग के वद्यार्थी, सभी ने उनकी वरासत को अंगीकार कया। ऑनलाइन साहित्य मंचों के माध्यम से आज भी नई पीढ़ियाँ उनके शब्दों को खोजती रहती हैं।

प्लै गयारिज़्म मुक्त लेखन की प्रेरणा:

निदा-फ़ाज़ली का लेखन हमेशा मौ लक, स्वतंत्र और आत्मीय रहा। आज के समय में जब साहित्य अक्सर रीमयेक या क्लिष्ट बन जाता है, उनकी रचनाएँ हमें याद दिलाती हैं क “सरलता में ही गहराई होती है” और “स्वर चत भावनाएँ पाठक के दिल को जीत लेती हैं”।

समापन: वदाई पर एक श्रद्धांज ल

निदा-फ़ाज़ली की क वताएँ और ग़ज़लें, उनके गीत-लेखन और आत्मकथा, सभी ने मलकर हिंदी-उर्दू साहित्य को एक अ मट छाप दी। “निदा-फ़ाज़ली: जीवन परिचय” मात्र एक परिचय नहीं, बल्कि उन भावनाओं, संवेदनाओं और संदेशों का दस्तावेज़ है जिन्हें उन्होंने शब्दों में परोया। सरल भाषा और गहरे एहसास की यह वरासत हमेशा नयी पीढ़ियों को प्रेरित करेगी।

“लफ़्ज़ों का पुल बुनकर, हर दिल में उतर जाऊँ
अनकही बातों को कहकर, मौजूदगी की पहचान बन जाऊँ।”
(उपन्यास रूपांतर)

निदा-फ़ाज़ली का जीवन एक ऐसे पुल का नाता था, जो हिंदी-उर्दू, प्रेम- वरह, मानवता-सामाजिकता को जोड़ता चला गया। वे चले तो गए, ले कन उनके शब्द कभी नहीं भुलाए जा सकते। आज भी उनकी क वताएँ, ग़ज़लें और गीत हमारी आत्मा को

संगीतबद्ध कर देते हैं। जब भी आपके मन में कसी दिल की तड़प हो, कसी वरह की पीड़ा हो, या मातृभू म के प्रति प्यार जागता हो—बस “निदा-फ़ाज़ली” का कोई मसरा मन में बजाइए, मल जायेगा वह एहसास जो शब्दों के परे होता है।

मौ खक

निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे क्यों धकेल रहे थे?

उत्तर **1:** बड़े बिल्डर जमीन पर कब्जा करने के इरादे से समुद्र को पीछे हटाने की को शश कर रहे थे।

प्रश्न 2. लेखक का घर कस शहर में था?

उत्तर **2:** लेखक का घर ग्वा लयर शहर में था।

प्रश्न 3. जीवन कैसे घरों में समटने लगा है?

उत्तर **3:** जीवन छोटे-छोटे डब्बेनुमा घरों तक सी मत होकर रह गया है।

प्रश्न 4. कबूतर परेशानी में इधर-उधर क्यों फड़फड़ा रहे थे?

उत्तर **4:** कबूतर बेचैनी से फड़फड़ा रहे थे क्यों क उनके अंडे टूट चुके थे।

ल खत

(क) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) ल खए-

प्रश्न 1. अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?

उत्तर **1:**

1. पद का प्रतीक: अरब में "नूह" शब्द एक वशेष पद का प्रतीक है। इस कारण लश्कर को नूह के नाम से याद कया जाता है।
2. आजीवन पश्चाताप: लश्कर ने एक बार घायल कुत्ते को अपशब्द कहे। कुत्ते ने उत्तर दिया, "सभी को ईश्वर ने बनाया है।" यह बात लश्कर के दिल को छू गई, और वे आजीवन रोते रहे। इस कारण भी उन्हें "नूह" कहा जाता है।

प्रश्न 2. लेखक की माँ कस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लए मना करती थीं और क्यों?

उत्तर **2:**

1. समय: लेखक की माँ सूरज ढलने के बाद पत्ते तोड़ने से मना करती थीं।
2. कारण: उनकी मान्यता थी क सूरज ढलने के बाद पेड़ों को नुकसान पहुँचाने से वे "रोते" हैं।

प्रश्न 3. प्रकृति में आए असंतुलन को क्या परिणाम हुआ?

उत्तर **3:**

1. मौसम में बदलाव: प्रकृति के असंतुलन ने मौसम चक्र को बिगाड़ दिया है। अब अ धक गर्मी, अप्रत्या शत बारिश, भूकंप, बाढ़ और तूफान जैसे हालात आम हो गए हैं।

2. नई बीमारियाँ: पर्यावरणीय असंतुलन से कई नई बीमारियाँ उत्पन्न हुई हैं, जो मानव जीवन के लए गंभीर खतरा हैं।

प्रश्न 4. लेखक की माँ ने पूरे दिन का रोजा क्यों रखा?

उत्तर **4:**

1. दुख का कारण: उनके घर में कबूतर के दो अंडे थे। एक बिल्ली ने अंडा तोड़ दिया और दूसरा अंडा उनके हाथ से गरकर टूट गया। इससे वे बेहद दुखी हुईं।

2. प्रायश्चित: इसे अपनी गलती मानते हुए उन्होंने उपवास रखा।

प्रश्न 5. लेखक ने ग्वा लयर से बंबई तक कन बदलावों को महसूस कया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर **5:**

1. पेड़ों का बदलता स्वरूप: लेखक के अनुसार, जहाँ उनका घर है, वहाँ पहले घने जंगल थे। ले कन अब वहाँ पर समुद्र कनारे बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बन चुकी हैं।

2. पशु-प क्षयों का पलायन: इन जंगलों में अनेक पशु-पक्षी रहते थे, ले कन बस्तियों के निर्माण ने उन्हें बेघर कर दिया, और उनकी संख्या घटने लगी।

प्रश्न 6. 'डेरा डालने से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **6:**

1. अस्थायी निवास: डेरा डालना का अर्थ है अस्थायी रूप से कसी स्थान पर ठहरना।

2. कबूतरों का डेरा: जंगल उजड़ने के बाद कबूतरों ने शहर छोड़ दिया। हालां क**,** दो कबूतरों ने लेखक के घर को अपना डेरा बना लया।

प्रश्न 7. शेख अयाज़ के पता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर **7:**

1. बेघर का अहसास: भोजन करते समय, उन्होंने देखा क उनकी बाजू पर एक काला चींटी रेंग रही है। उन्हें लगा क उन्होंने कसी जीव को बेघर कर दिया।

2. घर लौटाने की भावना: वे तुरंत उठ खड़े हुए ता क उस चींटी को उसके घर वापस छोड़ सकें।

(ख) निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर **(50-60** शब्दों में**)** ल खए-

प्रश्न 1. बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर **1:**

1. समुद्र का सकुड़ना:
   बढ़ती आबादी के लए भू म की आवश्यकता को पूरा करने हेतु समुद्रों में भराव कया गया। इससे समुद्र का आकार छोटा हो गया और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ने लगीं।

2. प्रदूषण में वृद् ध:
   आबादी के बढ़ने से प्रदूषण में तेज़ी आई। इसका परिणाम यह हुआ क वातावरण में बदलाव आने लगे, गर्मी बढ़ गई और बारिश अनिय मत हो गई।

3. पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं का नुकसान:
   भू म वस्तार के लए पेड़-पौधों की अंधाधुंध कटाई की गई। इसके कारण पर्यावरण को हानि पहुँची और कई जीव-जंतु वलुप्त हो गए।

प्रश्न 2. लेखक की पत्नी को खड़की में जाली क्यों लगवानी पड़ी?

उत्तर **2:**

1. कबूतरों का डेरा:
   लेखक के घर में कबूतरों ने खड़की के ज़रिए आना-जाना शुरू कर दिया। उनके इस व्यवहार से घर में गंदगी और परेशानी होने लगी।

2. नुकसान और असु वधा:
   कबूतरों की वजह से घर की चीज़ें टूटने लगीं और कताबें गंदी हो गईं। रोज़-रोज़ की इन समस्याओं से परेशान होकर, लेखक की पत्नी ने खड़की में जाली लगवा दी।

प्रश्न 3. समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला ?

उत्तर **3:**

1. समुद्र के गुस्से की वजह:
   बढ़ती आबादी के कारण भू म की मांग बढ़ गई। बिल्डरों ने समुद्र के हिस्से में भराव कर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे समुद्र सकुड़ता गया, ले कन जब यह अतिक्रमण हद से ज़्यादा बढ़ गया, तो समुद्र को गुस्सा आ गया।

2. गुस्सा उतारना:
समुद्र ने अपनी लहरों के ज़रिए गुस्सा जाहिर कया। उसने एक रात तीन जहाजों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह अलग-अलग दिशाओं में फेंक दिया। इस प्रकार उसने अपने साथ हुए अन्याय का वरोध कया।

प्रश्न 4 'मट्टी से मट्टी मले,

खो के सभी निशान

 कसमें कतना कौन है,

कैसे हो पहचान'

इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **4:**

(i) सभी का निर्माता एक ही है:
इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक इस सच्चाई को उजागर करता है क सभी प्राणी ईश्वर द्वारा बनाए गए हैं। नूह नामक पैगंबर से जुड़ी एक कथा का उल्लेख करते हुए कहा जाता है क जब एक गंदा कुत्ता उनके सामने आया और उन्होंने उसे अपमानित कया, तो कुत्ते ने उत्तर दिया, "न मैं अपनी इच्छा से कुत्ता बना हूँ और न तुम अपनी पसंद से इंसान। हम सबको बनाने वाला तो वही एक ईश्वर है।" यह कथा यह संदेश देती है क हर जीव का निर्माण समान रूप से ईश्वर द्वारा कया गया है।

(ii) शरीर की नश्वरता:
लेखक इन पंक्तियों में यह समझाने का प्रयास करता है क यह भौतिक शरीर नश्वर है। सभी के शरीर में आत्मा का वास होता है, और वह आत्मा समान होती है। जब शरीर नष्ट हो जाता है, तब यह पहचानना कठिन हो जाता है क आत्मा मनुष्य की थी या कसी पशु की। यह बात दर्शाती है क जीवन और आत्मा की मूलभूत सच्चाई में कोई भेदभाव नहीं है।

निष्कर्ष:
लेखक ने इन पंक्तियों के माध्यम से मानव और पशु जीवन के समान मूल और शरीर की नश्वरता को रेखां कत कया है, जो समभाव और एकता का संदेश देता है।

(ग) निम्न ल खत के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में देखने को मला था।

उत्तर 1: आशय- आज का मानव अपनी सु वधाओं के लए लगातार प्रकृति का शोषण कर रहा है। ले कन यह भूल जाता है क प्रकृति की सहनशक्ति भी सी मत है। जब यह सीमा पार होती है, तो प्रकृति अपना क्रोध दिखाती है। इसके परिणामस्वरूप बाढ़, भूकंप और तूफान जैसी आपदाएँ बढ़ रही हैं। वर्षों पहले मुंबई में प्रकृति के गुस्से का ऐसा ही एक उदाहरण देखने को मला था। इसी लए हमें प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर जीने की आवश्यकता है।

2. जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना ही कम गुस्सा आता है।

उत्तर 2: आशय- लेखक के अनुसार, जो व्यक्ति जितना महान होता है, वह उतना ही कम क्रो धत होता है। महानता का चह्न है धैर्य और शांत स्वभाव। महान व्यक्ति अपने क्रोध पर नियंत्रण रखता है और उसे अनावश्यक रूप से प्रकट नहीं करता।

3. इस बस्ती ने न जाने कतने परिंदों चरिंदों से उनका घर छीन लया है। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं, उन्होंने यहाँ वहाँ डेरा डाल लया है।

उत्तर 3: आशय - मनुष्य ने अपनी बस्तियाँ बसाने के लए जंगलों और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की है। इससे कई पशु-पक्षी बेघर हो गए। कुछ ने शहर छोड़ दिया, जब क जो नहीं जा सके, वे जहाँ-तहाँ अस्थायी आश्रय ढूँढने के लए मजबूर हो गए। यह घटना हमें याद दिलाती है क हमारा वकास, जीव-जंतुओं के जीवन को प्रभा वत कर रहा है।

4. शेख अयाज़ के पता बोले, 'नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घरवाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुएँ पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में छिपी हुई उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 4: आशय- शेख अयाज़ के पता ने कहा, "मैंने एक घरवाले को बेघर कर दिया है और उसे उसके घर वापस छोड़ने जा रहा हूँ।" इन शब्दों से उनकी करुणा और प्रेम झलकती है। वे केवल मनुष्यों के प्रति ही नहीं, बल्कि अन्य जीव-जंतुओं के प्रति भी सहानुभूति रखते थे। उनका स्वभाव हमें सखाता है क सच्चा सुख दूसरों की खुशी में है।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. उदाहरण के अनुसार निम्न ल खत वाक्यों में कारक चह्नों को पहचानकर रेखां कत कीजिए और उनके नाम रिक्त स्थानों में ल खए; जैसे-

(क) माँ ने भोजन परोसा। कर्ता

(ख) मैं कसी के लए मुसीबत नहीं हूँ।

(ग) मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया।

(घ) कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

(ङ) दरिया पर जाओ तो उसे सलाम कया करो।

उत्तर 1- (क) माँ ने भोजन परोसा। कर्ता

(ख) मैं कसी के लए मुसीबत नहीं हूँ।

- मैं → कर्ता
- कसी के लए → सम्प्रदान

(ग) मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया।

- मैंने → कर्ता
- एक घर वाले को → कर्म

(घ) कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

- कबूतर → कर्ता
- परेशानी में → अ धकरण

(ङ) दरिया पर जाओ तो उसे सलाम कया करो।

- दरिया पर → अ धकरण
- उसे → कर्म

प्रश्न 2. नीचे दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप ल खए-

चींटी, घोड़ा, आवाज़, बिल, फौज, रोटी, बिंदु, दीवार, टुकड़ा।-

उत्तर 2- दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप इस प्रकार हैं:

1. चींटी → चींटियाँ
2. घोड़ा → घोड़े
3. आवाज़ → आवाज़ें
4. बिल → बिल
5. फौज → फौजें
6. रोटी → रोटियाँ
7. बिंदु → बिंदु
8. दीवार → दीवारें
9. टुकड़ा → टुकड़े

नोट:

- कुछ शब्दों का बहुवचन उनके संदर्भ के अनुसार बिना परिवर्तन (जैसे "बिल" और "बिंदु") हो सकता है।
- शब्दों का सही बहुवचन रूप वाक्य और संदर्भ के आधार पर निर्धारित कया जाता है।

प्रश्न 3. ध्यान दीजिए नुक्ता लगाने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। पाठ में 'दफा' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ होता है- बार (गणना संबंधी), कानून संबंधी। यदि इस शब्द में नुक्ता लगा दिया जाए तो शब्द बनेगा 'दफा' जिसका अर्थ होता है- दूर करना, हटाना। यहाँ नीचे कुछ नुक्तायुक्त और नुक्तारहित शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें ध्यान से दे खए और अर्थगत अंतर को सम झए ।

सजा - सज़ा

नाज - नाज़

जरा - ज़रा

तेज - तेज़

निम्न ल खत वाक्यों में उ चत शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए-

(क) आजकल _______बहुत खराब है । (जमाना / ज़माना)

(ख) पूरे कमरे को _______ दो। (सजा / सज़ा)

(ग) ______चीनी तो देना। (जरा / ज़रा)

(घ) माँ दही________भूल गई । (जमाना / ज़माना)

(ङ) दोषी को_______दी गई। (सजा / सज़ा)

(च) महात्मा के चेहरे पर________था। (तेज/ तेज़)

उत्तर **3:** नुक्तायुक्त और नुक्तारहित शब्दों के सही उपयोग के साथ वाक्य पूरे कए गए हैं।

1. सजा / सज़ा
    - सजा (सजाना): दुल्हन को सजा दो।
    - सज़ा (दंड): दोषी को सज़ा दी गई।
2. नाज / नाज़
    - नाज (अनाज): खेत में नाज पड़ा है।
    - नाज़ (नखरा): उसे अपने रूप पर नाज़ है।
3. जरा / ज़रा
    - जरा (वृद्धावस्था): रामलाल जरा अवस्था से पी ड़त है।
    - ज़रा (थोड़ा): गलास में ज़रा सा पानी है।

4. तेज / तेज़

- तेज (प्रताप): शवाजी का तेज सारे भारत में फैला था।
- तेज़ (तीव्र गति): तेज़ हवा चल रही है।

निम्न ल खत वाक्यों में सही शब्द भरें:

(क) आजकल ज़माना बहुत खराब है।
(ख) पूरे कमरे को सजा दो।
(ग) ज़रा चीनी तो देना।
(घ) माँ दही जमाना भूल गई।
(ङ) दोषी को सज़ा दी गई।
(च) महात्मा के चेहरे पर तेज था।

नुक्तायुक्त और नुक्तारहित शब्दों का अंतर ध्यान से समझकर इनका प्रयोग करें, ता क भाषा की शुद्धता बनी रहे।

योग्यता वस्तार

1. पशु-पक्षी एवं वन्य संरक्षण केंद्रों में जाकर पशु-प क्षयों की सेवा सुश्रूषा के संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर 1- पशु-पक्षी एवं वन्य संरक्षण केंद्रों में जाकर उनके संरक्षण और सेवा से संबं धत जानकारी प्राप्त करना न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि यह प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी को समझने का अवसर भी देता है।

पशु-पक्षी सेवा केंद्रों में जाने के लाभ:

1. प्राकृतिक जीवन की समझ:
   इन केंद्रों में जाकर हम पशु-प क्षयों के प्राकृतिक आवास, उनके भोजन की आदतें, और उनकी जीवनशैली के बारे में गहराई से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

2. संरक्षण के प्रयास:
   यहां के वशेषज्ञ बताते हैं क कैसे वन्यजीवों की घटती संख्या और उनके आवास की समस्या को सुलझाने के लए काम कया जा रहा है।

3. स्वास्थ्य देखभाल:
   - पशु-प क्षयों को चोट लगने पर उनकी च कत्सा कैसे की जाती है।
   - उनके बीमार होने पर उन्हें स्वस्थ रखने के लए कन उपायों का प्रयोग होता है।
   - उनके आहार और पानी की आवश्यकता कैसे पूरी की जाती है।

क्या-क्या जानकारी मल सकती है:

1. पुनर्वास प्र क्रया:
   घायल या बीमार जानवरों को ठीक करने के बाद उन्हें जंगल में छोड़ने की प्र क्रया।
2. वन्यजीव संरक्षण के कानून:
   वन्यजीवों को बचाने के लए बनाए गए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की जानकारी।
3. जागरूकता अ भयान:
   स्थानीय समुदायों को पशु-प क्षयों के महत्व के बारे में कैसे जागरूक कया जाता है।
4. पुनर्निर्माण कार्यक्रम:
   वलुप्त हो रही प्रजातियों को बचाने और उनके प्रजनन के लए कए जा रहे प्रयास।

आप कैसे योगदान दे सकते हैं:

1. स्वयंसेवक बनें:
   इन केंद्रों में जाकर पशु-प क्षयों को भोजन देना, उनकी साफ-सफाई में मदद करना, और घायल पशुओं की देखभाल में भाग लेना।
2. दान करें:
   इन केंद्रों को आ र्थक रूप से सहयोग देकर उनकी सेवाओं को बेहतर बनाने में मदद करें।
3. शक्षा का प्रसार:
   अपनी जानकारी दूसरों के साथ साझा करें और उन्हें पशु-प क्षयों के संरक्षण के महत्व को समझाएँ।
4. स्थानीय स्तर पर काम करें:
   अपने क्षेत्र में पशु-प क्षयों की सुरक्षा और उनके संरक्षण के लए छोटे-छोटे प्रयास करें, जैसे क प क्षयों के लए पानी के बर्तन रखना या पेड़ों को बचाना।

उदाहरण के रूप में कुछ प्र सद्ध केंद्र:

1. भारत में वन्यजीव अभ्यारण्य:
   - रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान
   - काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, असम
   - सुन्दरवन टाइगर रिजर्व, पश्चिम बंगाल
2. पशु-पक्षी संरक्षण केंद्र:
   - वन वहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल
   - बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व, मध्य प्रदेश

- बीर मोटो पक्षी अभ्यारण्य, राजस्थान

इन केंद्रों में जाकर आप न केवल सीख सकते हैं, बल्कि प्रकृति के साथ गहरा जुड़ाव भी महसूस कर सकते हैं।

परियोजना कार्य

1. अपने आसपास प्रतिवर्ष एक पौधा लगाइए और उसकी समु चत देखभाल कर पर्यावरण में आए असंतुलन को रोकने में अपना योगदान 'दीजिए।

उत्तर 1: छात्र स्वयं करें।

प्रतिवर्ष एक पौधा लगाना और उसकी देखभाल करना पर्यावरण को संर क्षत करने का एक सरल ले कन प्रभावी उपाय है। यदि हर व्यक्ति यह संकल्प ले, तो हम पर्यावरण में हो रहे असंतुलन को काफी हद तक नियंत्रित कर सकते हैं।

पौधा लगाने और उसकी देखभाल के सुझाव:

1. उपयुक्त स्थान का चयन करें
   ऐसा स्थान चुनें जहां पौधा उ चत मात्रा में धूप और पानी पा सके। घर के आँगन, बगीचे, या स्कूल-कॉलेज के परिसर में पौधा लगाने के लए उपयुक्त स्थान हो सकता है।
2. पौधे का चयन करें
   अपने क्षेत्र की जलवायु और मट्टी के अनुसार पौधे का चयन करें। आम, नीम, पीपल, तुलसी, बरगद जैसे पौधे पर्यावरण के लए बहुत फायदेमंद होते हैं।
3. रोपण के लए समय
   मानसून का समय पौधा लगाने के लए सबसे अच्छा होता है क्यों क इस समय पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है, जिससे पौधा आसानी से बढ़ता है।
4. समु चत देखभाल करें
   - पौधे को निय मत रूप से पानी दें।
   - समय-समय पर खाद डालें।
   - कीटों और जानवरों से सुरक्षा के लए पौधे को ढकने के लए बाड़ा लगाएं।
5. लाभों का प्रचार करें
   दूसरों को भी पौधे लगाने के लए प्रेरित करें। अपने परिवार और मत्रों को पर्यावरण की महत्ता समझाएँ।

पर्यावरण में योगदान:

- ऑक्सीजन का उत्पादन: पौधे हवा को शुद्ध करते हैं और ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।
- मृदा संरक्षण: पौधे मट्टी का कटाव रोकते हैं।

- जल संरक्षण: पौधे भूजल स्तर को बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- जैव व वधता को बढ़ावा: पौधे पशु-प क्षयों को आवास प्रदान करते हैं।

इस छोटे से कदम से न केवल पर्यावरण को लाभ मलेगा, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लए भी स्वच्छ और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करेगा।

2. कसी ऐसी घटना का वर्णन कीजिए, जब अपने मनोरंजन के लए मानव द्वारा पशु-प क्षयों का उपयोग कया गया हो।

उत्तर 2: ऐसी कई घटनाएँ इतिहास में हुई हैं, जब मानव ने अपने मनोरंजन के लए पशु-प क्षयों का उपयोग कया। एक प्र सद्ध उदाहरण है हाथी और शेरों का खेल।

पुराने समय में, शाही दरबारों में मनोरंजन के रूप में पशुओं को एक दूसरे से लड़वाया जाता था। उदाहरण के लए, शेरों और हा थयों को एक खुले मैदान में लाकर उन्हें लड़वाने की परंपरा रही थी। शाही परिवार और अमीर लोग इसे देखने के लए इकट्ठा होते थे, और यह न केवल उनका मनोरंजन होता था, बल्कि शक्ति और धन का प्रतीक भी था।

इसी प्रकार के आयोजनों में बाघों, तेंदुओं, और अन्य हिंसक जानवरों को मानव के आदेश पर दिखाया जाता था। यह घटनाएँ आज के समय में अमानवीय मानी जाती हैं, क्यों क इनसे जानवरों को अत्य धक शारीरिक और मान सक पीड़ा पहुँचती थी।

आजकल, इन प्रकार की गति व धयों को बंद कया जा चुका है, और पशु अ धकारों की सुरक्षा को लेकर कड़े कानून लागू कए गए हैं।

पाठ 12 निदा-फ़ाज़ली (अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न–उत्तर, सारांश

पाठ 12 "अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले" का सारांश

"अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले" का सारांश

इस पाठ में मानव-प्रकृति संबंध के बिगड़ते पक्ष को रेखां कत कया गया है। शुरुआत में बताया गया है क प्रकृति ने सभी जीवों को अ वभाजित रूप से संपो षत कया, ले कन मानव ने आसमान से लेकर धरती तक अपनी एकांगी जागीर बना ली। इस परिदृश्य में अन्य प्रा णयों की नस्लें समाप्त होने लगीं, उन्हें आश्रय छोड़ना पड़ा या वे वास खोजते भटकते रहे।

पाठ में बाइबिल के सुलेमान की एक घटना उद्धृत है, जहाँ वे चींटियों को आश्वासन देते हैं क कोई खतरा नहीं, क्यों क उनका रक्षक वही है। इसी प्रकार शेख़ अय्याश की आत्मकथा से एक कस्सा है जब उन्होंने माता के बताए आदर्शों के अनुरूप घर की रोटी पर रेंगती चींटी को सुर क्षत स्थान पर छोड़ दिया। इन कहानियों से यह संदेश मलता है क पूर्वजों में दूसरों की पीड़ा समझने और सहानुभूति रखने की भावना प्रबल थी।

इसके वपरीत, आधुनिक युग में मानव ने खुद सहित अन्य प्रा णयों की उतनी परवाह नहीं रखी। उदाहरणतः मुंबई के समुद्र तटों पर बेतहाशा निर्माण, प्रदूषण और अतिक्रमण के कारण समुद्र ने गुस्से में तीन जहाज़ कनारे पर पटक दिए। इससे स्पष्ट होता है क जब हमने प्रकृति के साथ संतुलन खो दिया, तो उसकी प्रति क्रयाएँ वनाशकारी हो गईं।

पाठ में एक और दृश्य है, जब ग्वा लयर में एक माता ने कबूतरों के अंडों के टूटने पर पूरे दिन उपवास रखा और रोज़ा रखा। यह दर्शाता है क पूर्वा भभावक भावनाएँ कतनी गहरी होती थीं, जब क वर्तमान में ऐसी पोस्ट-पूजा श्रद्धा कम दिखाई देती है।

अंत में बताया गया है क जहाँ पहले सभी जीव एक परिवार की तरह शांतिपूर्वक रहते थे, आज इंसान ने खुद को सर्वोपरि मानकर अन्य जीवों का अस्तित्व संकट में डाल दिया है। गाजी प्रकरणों, पर्यावरणीय असंतुलन और सामुद्रिक आक्रोश ने यह साबित कर दिया क जब इंसान दूसरों की कमज़ोरी और दुख को समझना छोड़ देता है, तो न केवल अन्य प्राणी, बल्कि स्वयं उसका जीवन भी प्रकृति के क्रोध की राह पर चल पड़ता है।

पाठ 12 निदा-फ़ाज़ली (अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले) पर आधारित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: निदा-फ़ाज़ली का जन्म कब और कहाँ हुआ तथा उनका बचपन कहाँ बीता?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली का जन्म 12 अक्तूबर 1938 को दिल्ली में हुआ था और उनका बचपन ग्वा लयर में बीता। ग्वा लयर के सांस्कृतिक और पारिवारिक माहौल ने उनकी रु च को क वता और साहित्य की ओर प्रेरित कया। आ र्थक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने शक्षा जारी रखी और उर्दू तथा हिंदी साहित्य से जुड़ गए। इस समय से ही निदा-फ़ाज़ली ने सरल बोलचाल की भाषा में क वताएँ लखनी शुरू कर दीं।

प्रश्न 2: निदा-फ़ाज़ली की काव्य-शैली की मुख्य वशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की काव्य-शैली में आम बोलचाल की भाषा और गहन भावनात्मक अ भव्यक्ति का सुंदर मेल मलता है। उन्होंने जटिल अलंकारों का त्याग करके सरल शब्दों में मनुष्य के अनुभव, प्रेम और वरह की पीड़ा को बखूबी परोया। उनकी क वताएँ पढ़ने वाले के दिल-दिमाग में घर कर जाती हैं। शेर-ओ-शायरी का सहज समावेश और गद्य में तीक्ष्णता की क्षमता उन्हें समकालीन साहित्य में अलग पहचान दिलाती है।

प्रश्न 3: निदा-फ़ाज़ली की पहली क वता पुस्तक का नाम क्या है और वह कब प्रका शत हुई?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की पहली क वता पुस्तक 'लफ़्ज़ों का पुल' नामक संग्रह थी, जो 1961 में प्रका शत हुई। इस संग्रह में उनकी लखी नज़्में आधुनिक भाषा, प्रेम-प्रवर्तन और सामाजिक सरोकारों से भरी थीं। इस पुस्तक ने उन्हें तत्काल पहचान दिलाई और हिंदी-उर्दू दोनों भाषी पाठकों के बीच लोक प्रयता प्राप्त की। 'लफ़्ज़ों का पुल' में दी गई सरल अ भव्यक्ति ने निदा-फ़ाज़ली को काव्य जगत में स्था पत कया।

प्रश्न 4: निदा-फ़ाज़ली की ग़ज़ल संग्रह 'खोया हुआ सा वजूद' की वशेषता क्या है और उसे कब सम्मान मला?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की ग़ज़ल संग्रह 'खोया हुआ सा वजूद' 1998 में प्रका शत हुई थी। इस संग्रह में अस्तित्व की खोज, प्रेम और समय की बिखरन जैसे गहन वषयों को उन्होंने सरल उर्दू ग़ज़ल-बोल में परोया। इस कृति को 1999 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कया गया। इस पुरस्कार ने निदा-फ़ाज़ली को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित क व के रूप में स्था पत कया और उनकी लेखनी का महत्व बढ़ाया।

प्रश्न 5: निदा-फ़ाज़ली की गद्य रचनाओं में शेर-ओ-शायरी का प्रयोग कैसे दिखाई देता है?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली अपनी गद्य रचनाओं में शेर-ओ-शायरी का सुगम समावेश करते थे, जिससे उनकी बात संक्षेप में भी गहरे अर्थ छोड़ जाती थी। आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत या निबंध में अचानक प्रेम, वरह या सामाजिक संदेश वाले शेर प्रस्तुत करके वे पाठक के हृदय को सीधा छू लेते थे। इस अनूठी शैली ने हिंदी-उर्दू गद्य को क वता जैसा बना दिया, जहाँ कम शब्दों में अ धक कहने की क्षमता दिखाई देती है।

प्रश्न 6: निदा-फ़ाज़ली का आत्मकथा का पहला भाग कस नाम से प्रका शत हुआ और उसमें क्या वषय-वस्तु है?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की आत्मकथा का पहला भाग 'दीवारों के बीच' नाम से 2004 में प्रका शत हुआ। इस खंड में उन्होंने अपने बचपन की यादें, ग्वा लयर से जुड़े अनुभव, परिवार की आ र्थक चुनौतियाँ और दिल्ली में साहित्यिक मंचों पर पदार्पण जैसी घटनाएँ वस्तार से लखीं। सरल भाषा में व्यक्तिगत संघर्ष और काव्य-संबंधी प्रारं भक अनुभवों को बयां करके उन्होंने पाठकों को अपने जीवन के वास्त वक पहलुओं से परि चत कराया।

प्रश्न 7: निदा-फ़ाज़ली का आत्मकथा का दूसरा भाग क्या है और उसमें कस वषय पर प्रकाश डाला गया है?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की आत्मकथा का दूसरा भाग 'दीवारों के पार' नाम से 2008 में प्रका शत हुआ। इस खंड में उन्होंने मुंबई चले जाने का फैसला, फल्म उद्योग से संबंध, गीत-लेखन के अनुभव और व्यक्तिगत उतार-चढ़ाव का वर्णन कया। बॉलीवुड की दुनिया में शुरुआती चुनौतियाँ, संगीतकारों के साथ सहयोग और सामाजिक जीवन दोनों को मर्मस्पर्शी शब्दों में उकेरते हुए उन्होंने आत्मकथा में आत्म वश्लेषण का नया आयाम दिया।

प्रश्न 8: निदा-फ़ाज़ली को फल्म उद्योग से कस रूप में जुड़ने का अवसर मला और उन्होंने क्या योगदान दिया?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली को मुंबई आकर फल्म उद्योग में गीत-लेखन का अवसर मला। उन्होंने लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, एन.सी.जीर, तथा अन्य संगीतकारों के साथ मलकर यादगार फल्मी गीत लखे, जैसे "ग़म मेरे द्वार तक" (परिंदा) और "चली आई आ ख़री हवादार सा झोंका" (समझ)। उनकी सरल भाषा और भावनात्मक अ भव्यक्ति ने फल्मी संगीत को नई ऊँचाई दी। इस योगदान से निदा-फ़ाज़ली हिंदी सने संगीत जगत में भी प्रतिष्ठित हुए।

प्रश्न 9: पाठ "अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले" के अनुसार मानव ने प्रकृति के साथ कैसा व्यवहार कया?

उत्तर: पाठ में व र्णत है क मानव ने प्रकृति की इस धरती को अपने लए संपूर्ण जागीर बना लया। पंछी-पशु अपने आ शयानों से बेघर हुए, वन्य जीवन अस्त-व्यस्त हो गया और प्रदूषण ने वातावरण को संकटग्रस्त कया। समुद्र के कनारे बड़े बिल्डरों ने मुल्क की जमीन पर कब्ज़ा कर दिया, जिससे समुद्र का गुस्सा आया। निदा-फ़ाज़ली की मानव केंद्रित संवेदनाएँ इस पाठ के संदेश से मलती-जुलती हैं क हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए।

प्रश्न 10: पाठ में सुलैमान (सुलेमान) और चींटियों के बीच का संवाद क्या संदेश देता है?

उत्तर: पाठ में बताया गया है क सुलैमान, जिन्हें ईसा से 1025 वर्ष पूर्व का बादशाह कहा गया, चींटियों के डर को समझकर उनके बिलों में सुर क्षत रहने का आश्वासन देते हैं। उनका संवाद इस बात का प्रतीक है क इंसान को अन्य जीवधारियों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। चींटियाँ प्रार्थना करके शांत होती हैं, जब क सुलैमान का संदेश यह है क वह सभी का रखवाला है। निदा-फ़ाज़ली की मानवीय संवेदना भी इसी सन्देश को प्रतिध्वनित करती है।

प्रश्न 11: शेख अयाश की आत्मकथा में कस घटना का वर्णन कया गया है और उसका क्या संदेश है?

उत्तर: पाठ में लखा है क एक दिन शेख अयाश के पता स्नान करके भोजन पर बैठे। रोटी के टुकड़े पर एक काला चींटी घूम रही थी। पता ने भोजन छोड़कर चींटी को सुर क्षत स्थान पर ले जाने का निर्णय लया। यह घटना उदाहरण है क छोटी-सी

चींटी के प्रति भी मानवीय संवेदना होनी चाहिए। निदा-फ़ाज़ली की सोच से मलता-जुलता यह संदेश है क हमें सभी जीवों को सम्मान और दया की दृष्टि से देखना चाहिए।

प्रश्न 12: नूह (नूह) और घायल जीव के बीच संवाद से पाठ में कस वास्त वकता पर प्रकाश डाला गया है?

उत्तर: पाठ में व र्णत है क नूह ने घायल जीव को देखकर उसे "गंदा जीव" कहकर अपमानित कया। घायल जीव ने उत्तर दिया क "मैं अपनी मर्ज़ी से जीव नहीं हूँ, सभी का निर्माता वही एक है।" इस संवाद से पता चलता है क सभी प्रा णयों का अस्तित्व समान है और मानव को कसी को नीचा नहीं समझना चाहिए। निदा-फ़ाज़ली की क वताओं में भी समानता और करुणा के भाव दिखाई देते हैं, जो इस संदेश को पुष्ट करते हैं।

प्रश्न 13: महाभारत में यु धष्ठिर का साथ निभाने वाला "एकांत" कौन था और उसका क्या प्रतिनि धत्व है?

उत्तर: महाभारत में यु धष्ठिर का जो इकलौता साथी अंत तक साथ रहता है, वह प्रतीकात्मक रूप में "एकांत" ही है। इसमें दिखाया गया है क जब सारे रिश्ते और साथी साथ छोड़ देते हैं, तब भी एकांत यानी अकेलापन इंसान के साथ बना रहता है। पाठ में यह उदाहरण मानव जीवन में अंतर्निहित अकेलेपन और आत्मनिरीक्षण का प्रतीक है। निदा-फ़ाज़ली भी अपनी क वताओं में अकेलेपन की पीड़ा को सरल शब्दों में बख़ूबी व्यक्त करते रहे।

प्रश्न 14: पाठ के अनुसार मानव और प्रकृति के असंतुलन के कारण कौन-कौन सी समस्याएँ उत्पन्न हुईं?

उत्तर: पाठ में बताया गया है क मनुष्यों ने जंगल काटकर बस्तियाँ बनाई, प्रदूषण बढ़ा, समुद्र की सीमा पीछे हटाई और बड़े बिल्डरों ने समुद्र का कनारा कब्ज़ा कया। परिणामस्वरूप गर्मी तेज़ हुई, अनिय मत बारिश, तूफ़ान, बाढ़ और नए रोग उत्पन्न हुए। एक उदाहरण में मुंबई के समुद्र ने तीन जहाज़ों को उठाकर दूर फैंका, जिससे लोगों में भय व्याप्त हुआ। निदा-फ़ाज़ली की संवेदनाएँ भी प्रकृति के संरक्षण की वकालत करती हैं।

प्रश्न 15: पाठ में समुद्र का उदाहरण कैसे प्रस्तुत कया गया है और उससे क्या संदेश मलता है?

उत्तर: पाठ में व र्णत है क मुंबई में लोगों ने समुद्र को पीछे धकेला और उसका क्षेत्र सकुड़ता गया। अंततः समुद्र गुस्से में आकर अपनी ऊँची लहरों से तीन जहाज़ों को कनारे पर फेंक दिया। पहली बार वर्ली में, दूसरी बार बांद्रा में, तीसरी बार गेटवे ऑफ इं डया पर भारी तबाही मची। यह बताता है क मानव द्वारा प्रकृति की अनदेखी और उसके अ धकारों का उल्लंघन भारी परिणाम ला सकता है। निदा-फ़ाज़ली के भाव भी प्रकृति के प्रति सहानुभूति जगाते हैं।

प्रश्न 16: पाठ में माँ द्वारा प्राकृतिक तत्वों के प्रति संवेदनशीलता के कौन से उदाहरण दिए गए हैं?

उत्तर: पाठ में माँ कहती थीं क "सूरज ढले आँगन के पेड़ से पत्ते मत तोड़ो, पेड़ रोएँगे" और "दीया-बत्ती के वक्त फूल मत तोड़ो, फूल बददुआ देते हैं।" वह कहती थीं क दरिया को सलाम कया करो, कबूतरों को सताया मत करो। इस संवेदना में बताया गया क प्रकृति के प्रत्येक तत्व के साथ ममत्वपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। निदा-फ़ाज़ली की क वताओं में भी इसी तरह का सम्मान और करुणा प्रद र्शत होता है।

प्रश्न 17: पाठ में कबूतरों के साथ हुई दो घटनाओं का सं क्षप्त ववरण दीजिए।

उत्तर: पहली घटना ग्वा लयर में हुई, जहाँ कबूतरों ने घर के दरवाजे पर घोंसला बनाया। बिल्ली ने एक अंडा तोड़ दिया, माँ ने दूसरे अंडे को बचाने का प्रयास कया ले कन वह टूट गया। माँ ने पूरा दिन रोजा रखकर कबूतरों के प्रति माफी माँगी। दूसरी घटना मुंबई के फ्लैट पर हुई, जहाँ कबूतरों ने लाइब्रेरी में आकर शोर मचाया। पत्नी ने उनके घोंसले पर जाली लगाई, जिससे कबूतर उदास हो गए।

प्रश्न 18: पाठ में व र्णत नदिया की क वतात्मक पंक्तियाँ "नदिया सींचे खेत को..." का क्या अर्थ है?

उत्तर: "नदिया सींचे खेत को, तोता बतख़रे आम। सूरज ठेकेदार-सा, सबको बाँटे काम।" इन पंक्तियों में नदिया का काम खेतों को सींचना, प क्षयों को पानी देना बताया गया है। तोता और बतख़ को आम की तरह पानी उपलब्ध कराकर जीवन में सहारा देना दर्शाया गया है। सूरज सबके लए अपने प्रकाश और ऊर्जा का वतरण करता है। यह मानव और प्रकृति के संतु लत संबंध का संदेश देता है, जिसे निदा-फ़ाज़ली भी महत्व देते थे।

प्रश्न 19: "दीवारों के बीच" और "दीवारों के पार" कौन-सी रचनाएँ हैं और उनके महत्व पर प्रकाश डा लए।

उत्तर: "दीवारों के बीच" (2004) और "दीवारों के पार" (2008) निदा-फ़ाज़ली की आत्मकथा के दो खंड हैं। "दीवारों के बीच" में उनके बचपन, परिवार और ग्वा लयर के दिनों का वर्णन है। "दीवारों के पार" में उन्होंने मुंबई में फल्म उद्योग से जुड़ने और व्यक्तिगत संघर्ष का ववरण दिया। दोनों रचनाओं में सरल भाषा में जीवन की चुनौतियाँ और साहित्यिक यात्रा का यथार्थ प्रस्तुत कया गया, जो आत्म-प्रेरणा का काम करते हैं।

प्रश्न 20: पाठ के आधार पर मानव जाति की स्वार्थपूर्ण गति व धयों ने प्रकृति के साथ संबंध को कैसे प्रभा वत कया?

उत्तर: पाठ में बताया गया है क मानव जाति ने जंगल काटे, पेड़ों को हटाया, नदी-समुद्र के कनारे के इलाके पर कब्ज़ा कया, प्रदूषण बढ़ाया और जीवों को बेघर कया। इस स्वार्थ ने प्रकृति के साथ असंतुलन उत्पन्न कया, जिससे अनिय मत मौसम, बाढ़, तूफ़ान और बीमारियाँ आईं। एक उदाहरण में मुंबई के समुद्र ने गुस्से में तीन जहाज़ फेंके। निदा-फ़ाज़ली की मानवीय संवेदनाएँ हमें यह याद दिलाती हैं क प्रकृति का सम्मान और संरक्षण आवश्यक है।

पाठ 12 निदा-फ़ाज़ली (अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले) पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. निदा-फ़ाज़ली का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली का जन्म 12 अक्टूबर 1938 को दिल्ली में हुआ था। बचपन में उनके माता- पता ने आ र्थक तंगी के कारण ग्वा लयर शफ्ट कर दिया, जहाँ उनका प्रारं भक जीवन गुजरा और उन्होंने उर्दू व हिंदी साहित्य के प्रति रु च वक सत की।

प्रश्न 2. निदा-फ़ाज़ली का बचपन कहाँ बीता और उस समय का वातावरण कैसा था?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली का बचपन ग्वा लयर में बीता। ग्वा लयर के सांस्कृतिक माहौल—ठुमरी, कथक, शास्त्रीय संगीत और लोकभाषा—ने उन्हें बहुत प्रभा वत कया। वहाँ के साहित्यिक कार्यक्रमों ने उनकी लेखनी में लोकजीवन की सहजता और संवेदना भर दी।

प्रश्न 3. निदा-फ़ाज़ली ने साहित्यिक नाम कैसे चुना?

उत्तर: अस्रार-उल-हक़ नामकरण के बाद उन्होंने 'निदा' और 'फ़ाज़ली' अपनाया। 'निदा' का अर्थ "आवाज़" या "बुलंद पुकार" और 'फ़ाज़ली' का संकेत "उपहार" या "कृपा" से था। इस नाम से उनके क व व्यक्तित्व में बुलंद संदेश और सौम्यता दोनों झलकते हैं।

प्रश्न 4. निदा-फ़ाज़ली की पहली क वता संग्रह कौन-सी थी?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की पहली क वता संग्रह 'लफ़्ज़ों का पुल' है, जो 1961 में प्रका शत हुई। इस संग्रह में उन्होंने आम बोलचाल की भाषा में भावों को व्यक्त कया। उनकी नज़्मों की सरलता और गहनता ने पाठकों का ध्यान तुरंत आक र्षत कया।

प्रश्न **5.** निदा-फ़ाज़ली की गद्य रचनाओं की वशेषता क्या थी?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की गद्य रचनाओं में शेर-ओ-शायरी बखूबी परोई गई थी। वे कम शब्दों में गहरा संदेश देने में माहिर थे। उनके लेखों में समाज-संबंधी, आत्म-निरीक्षण या यात्रा-वृत्तांत में कभी-कभी एक-सीधी क वता शा मल होती, जो संपूर्ण वषय को संक्षेप में व्यक्त कर देती।

प्रश्न **6.** निदा-फ़ाज़ली को साहित्य अकादेमी पुरस्कार कस कृति के लए मला?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली को 1999 में उनकी उर्दू ग़ज़ल संग्रह 'खोया हुआ सा वजूद' के लए साहित्य अकादेमी पुरस्कार मला। इस कृति में उन्होंने आत्म-खोज, वरह, समाजिक पीड़ा और ग़ज़ल की पारंपरिक शैली में नवीनता का अनूठा सम्मिश्रण प्रस्तुत कया था।

प्रश्न **7.** निदा-फ़ाज़ली ने आत्मकथा के कौन–कौन से भाग लखे?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की आत्मकथा के दो भाग प्रका शत हुए: पहला 'दीवारों के बीच' (शुरुआती जीवन, ग्वा लयर, दिल्ली के अनुभव) और दूसरा 'दीवारों के पार' (मुंबई में फल्म जगत, व्यक्तिगत अनुभव और लेखन-यात्रा)। दोनों खंडों में सरल भाषा में जीवन की चुनौतियाँ और संवेदनाएँ दर्शाई गई हैं।

प्रश्न **8.** निदा-फ़ाज़ली ने फल्मी दुनिया में कन कार्यों से योगदान दिया?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली ने बॉलीवुड में गीतकार के रूप में काम कया। उन्होंने 'परिंदा', 'समझ', 'जानें भी दो यारों' जैसी फल्मों के गीत लखे। उनकी गीत रचनाएँ आम बोलचाल की भाषा में होने के कारण सीधे दिल तक पहुँचने वाली थीं और संगीतकारों द्वारा बखूबी संगीतबद्ध की गईं।

प्रश्न **9.** निदा-फ़ाज़ली का निधन कब और कहाँ हुआ?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली का निधन 8 फरवरी 2016 को मुंबई में हुआ। लंबी बीमारी के बाद उन्होंने अंतिम सांस ली। उनकी मृत्यु पर साहित्य और फल्म जगत ने दुख व्यक्त कया और उनके योगदान को याद कया।

प्रश्न **10.** निदा-फ़ाज़ली की रचनात्मक शैली का वशेष लक्षण क्या था?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की रचनाओं में आम बोलचाल की भाषा तथा सरलता थी। वे जटिल अलंकारों का परहेज़ करके सीधे-सीधे भावों को शब्दों में परोते। उनकी ग़ज़लें, नज़्में और गद्य रचनाएँ कम शब्दों में गहरी संवेदना भरने में सक्षम थीं, जिससे पाठक सहजता से जुड़ जाते।

प्रश्न **11.** निदा-फ़ाज़ली के प्रथम प्रकाशन 'लफ़्ज़ों का पुल' का सामाजिक प्रभाव क्या था?

उत्तर: 'लफ़्ज़ों का पुल' के बाद निदा-फ़ाज़ली ने उर्दू और हिंदी पाठकों में लोक प्रयता हा सल की। इस संग्रह ने आम जीवन के भावों को प्रासं गक बनाकर साहित्यिक परिदृश्य में उनकी एक नई पहचान बनाई और सरल भाषा में लखी रचनाओं के महत्व को रेखां कत कया।

प्रश्न **12.** निदा-फ़ाज़ली ने दो भाषाओं में कैसे योगदान दिया?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में सहज थे। उन्होंने हिंदी-उर्दू के म श्रत गीत, ग़ज़लें, गद्य और आत्मकथा लखीं। उनकी द् वभाषी पहचान ने हिंदी और उर्दू प्रे मयों को एक साथ जोड़ने का काम कया, क्यों क उनकी क वताओं और ग़ज़लों में दोनों भाषाओं के भाव एक समान मलते थे।

प्रश्न 13. निदा-फ़ाज़ली के गीतों में मानवता कैसे झलकती थी?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली के गीतों में रोज़मर्रा की घटनाओं, प्रेम, वरह और समाजिक चेतना का मश्रण था। वे भावुकता को सरल मुखरता से व्यक्त करते, जिससे गीत सुनने वालों को मानवीय संवेदना का एहसास होता। उनकी रचनाएँ सर्फ़ मनोरंजन नहीं, बल्कि संदेश भी देतीं।

प्रश्न 14. निदा-फ़ाज़ली की आत्मकथा 'दीवारों के बीच' का मुख्य वषय क्या है?

उत्तर: 'दीवारों के बीच' में निदा-फ़ाज़ली ने अपने बचपन के अनुभव, ग्वा लयर-दिल्ली के दिन, पारिवारिक आ र्थक तंगी, साहित्यिक मंचों पर कदम रखने की उलझनें और लोकजीवन की झलक प्रस्तुत की। इस खंड में पाठक सरल भाषा में उनके निजी संघर्ष और जीवन यात्रा से रू-ब-रू होते हैं।

प्रश्न 15. निदा-फ़ाज़ली को फल्मी गीत लेखन में कस बात के लए याद कया जाता है?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली को उनकी फल्मी गीतों में गहराई और सादगी के लए याद कया जाता है। उनकी रचनाएँ आम बोलचाल की भाषा में ऐसी भावनाएँ बयां करतीं क संगीतकारों ने उन्हें बखूबी संगीतबद्ध कया। इससे उनके गीत आज भी लोक प्रय हैं और अनेक कार्यक्रमों में गाए जाते हैं।

प्रश्न 16. निदा-फ़ाज़ली को साहित्य अकादेमी पुरस्कार कब मला और क्यों?

उत्तर: 1999 में निदा-फ़ाज़ली को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 'खोया हुआ सा वजूद' ग़ज़ल संग्रह के लए मला। इस कृति में उन्होंने अस्तित्ववाद, आत्म-खोज और आधुनिक जीवन की पीड़ा को उर्दू ग़ज़ल के पारंपरिक ढांचे में नवीनता के साथ प्रस्तुत कया, जो अकादेमी द्वारा उच्च श्रेणी में मान्यता प्राप्त हुई।

प्रश्न 17. निदा-फ़ाज़ली की द् वभाषीय पहचान का साहित्य पर प्रभाव क्या रहा?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की द् वभाषीय पहचान ने हिंदी-उर्दू साहित्य को एक सेतु प्रदान कया। उनकी रचनाओं में हिंदी के सहज शब्द और उर्दू के अलंकार एक समान जीवन्त लगते। इस कारण हिंदी-उर्दू के पाठकों ने उन्हें समान रूप से अपनाया और द् वभाषीय साहित्य की सीमा-रेखा को लांघा।

प्रश्न 18. निदा-फ़ाज़ली की रचनाएँ आज कैसे प्रासं गक हैं?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली की रचनाएँ आज भी प्रासं गक हैं क्यों क उन्होंने जीवन की सामान्य घटनाओं, सामाजिक असंतुलन और मानवीय संवेदनाओं को सरल शब्दों में व्यक्त कया। उनकी क वताएँ, शायरी और गद्य आज की पीढ़ी को भी प्रेरित करती हैं और भावनात्मक जुड़ाव का मार्ग दिखाती हैं।

प्रश्न 19. निदा-फ़ाज़ली ने कस शैली में गद्य लेखन कया?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली ने अपने गद्य में शेर-ओ-शायरी का अनूठा समावेश कया। उनके यात्रा-वृत्तांत, आत्मकथा और निबंधों में कभी-कभी एक या दो ग़ज़ल की पंक्तियाँ आ जातीं, जो संपूर्ण वषय को सं क्षप्त व प्रबल रूप से प्रस्तुत कर देतीं, जिससे पाठक का मन सहजता से जुड़ जाता।

प्रश्न 20. निदा-फ़ाज़ली की सामाजिक चेतना उनके लेखन में कैसे दिखाई देती थी?

उत्तर: निदा-फ़ाज़ली ने अपने लेखन में सामाजिक मुद्दों—प्रदूषण, साम्प्रदायिकता, प्राणी अ धकार, पर्यावरण—पर प्रकाश डाला। उनकी क वता और गद्य दोनों में मानवीय मूल्यों का संदेश था। वे बोलते थे क प्रकृति और इंसान का संतुलन बिगड़ा तो अराजकता आएगी, और यह संदेश उन्होंने अपनी सहज भाषा में रच-बसाया।

पाठ 12 निदा-फ़ाज़ली (अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले) पर आधारित (MCQs)

प्रश्न 1: मानव ने पृथ्वी पर अन्य जीवों के साथ क्या व्यवहार कया, जैसा पाठ में उल्लेख है?

A) सब जीवों के साथ सौहार्द पूर्वक सहअस्तित्व कया

B) अन्य जीवों का संरक्षण कर सभी को सुर क्षत रखा

C) पृथ्वी को अपनी जागीर बना लया और अन्य जीवों को दर-ब-दर कर दिया

D) सभी जीवों को समान अ धकार दे दिए

उत्तर: **C)** पृथ्वी को अपनी जागीर बना लया और अन्य जीवों को दर-ब-दर कर दिया

प्रश्न 2: सुलेमान ने चींटियों को क्या आश्वासन दिया था?

A) "मैं तुम्हें भेद दूँगा"

B) "सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है, मुझे तुमसे खतरा नहीं"

C) "तुम्हारी मदद तब तक नहीं करूँगा जब तक तुम मेरी सेवा न करो"

D) "मैं तुम्हें अपनी फ़ौज में शा मल कर लूँगा"

उत्तर: **B)** "सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है, मुझे तुमसे खतरा नहीं"

प्रश्न 3: "शेख़ अय्याश" के पता ने काले कुएँटे (वुफत्ता) को क्या करने का निर्णय लया?

A) उसे मारने का

B) गोद में पनाह देने का

C) उससे दूर रहने का

D) उसे घर में ही छोड़ देने का

उत्तर: **D)** उसे घर में ही छोड़ देने का

प्रश्न 4: नूह और वुफत्ता के बीच प्रसंग में वुफत्ता ने क्या कहा?

A) "मैं गंदा हूँ, दूर हो जाओ!"

B) "मैं तुम्हारी कौम से बुरा नहीं हूँ, बनाने वाला एक ही है"

C) "इंसान ही सबका रक्षक है"

D) "मैं केवल खाने के लए रोता हूँ"

उत्तर: **B)** "मैं तुम्हारी कौम से बुरा नहीं हूँ, बनाने वाला एक ही है"

प्रश्न 5: महाभारत में यु धष्ठिर का अनंत तक साथ निभाने वाला साथी कौन था, जैसा प्रतीकात्मक रूप में बताया गया?

A) एक सुन्दर शैया

B) एक वुफत्ता (सूअर)

C) एक वुफत्ता (कुत्ता/कुक्कुर का रूपक)

D) एक हाथी

उत्तर: **C)** एक वुफत्ता (कुत्ता/कुक्कुर का रूपक)

प्रश्न **6:** समुद्र ने एक रात में तीन जहाज़ों को कैसे कार्रवाई की?

A) एक के ऊपर तैरता हुआ पकड़ा, दूसरे को तोड़ा, तीसरे को धकेल दिया

B) तीनों जहाज़ों को एक ही दिशा में फेंक दिया

C) तीनों जहाज़ों को पानी के भीतर डुबो दिया

D) तीनों जहाज़ों को कनारे पटक दिया

उत्तर: **D)** तीनों जहाज़ों को कनारे पटक दिया

प्रश्न **7:** पाठ में "वर्सोवा" पहले कैसा स्थान था?

A) एक व्यस्त बाज़ार

B) जंगल और प्राकृतिक वातावरण वाला क्षेत्र

C) एक बड़ा प्राचीन शहर

D) मीठे पानी की झील

उत्तर: **B)** जंगल और प्राकृतिक वातावरण वाला क्षेत्र

प्रश्न **8:** निदा-फ़ाज़ली ने पाठ में कस घटना का वर्णन करते हुए सामाजिक असंतुलन पर प्रकाश डाला?

A) क़ला तोड़ना

B) वर्सोवा में पेड़ों व परिंदों के घर खोना

C) एक बगीचे में फूल तोड़ना

D) नदी में मछ लयाँ पकड़ना

उत्तर: **B)** वर्सोवा में पेड़ों व परिंदों के घर खोना

प्रश्न **9:** "दीवारों के बीच" और "दीवारों के पार" कसकी आत्मकथा के दो खंड हैं?

A) सुलेमान अय्यूब

B) निदा-फ़ाज़ली

C) क़ा लद हुसैन

D) मर्ज़ा ग़ा लब

सही उत्तर: B) निदा-फ़ाज़ली

प्रश्न **10:** पाठ में मानव ने कसे "अपनी जागीर" बना लया?

A) सर्फ़ पेड़ों को

B) गाँव के लोगों को

C) पूरे जीवधारियों (प्रा णयों) को

D) केवल पशुओं को

उत्तर: **C)** पूरे जीवधारियों (प्रा णयों) को

प्रश्न **11:** पाठानुसार, "वुफत्ता" शब्द का संदर्भ कससे है?

A) कुत्ता

B) बिल्ली

C) घोड़ा

D) शेर

उत्तर: A) कुत्ता

प्रश्न **12:** सुलेमान को ईश्वर ने क्या दे रखा था?

A) गुफ्तगू का गुण

B) चारों ओर के पशु-प क्षयों का रखवाला बनने की शक्ति

C) धन-दौलत की शक्ति

D) केवल इंसानों की भाषा समझने की शक्ति

उत्तर: **B**) चारों ओर के पशु-प क्षयों का रखवाला बनने की शक्ति

प्रश्न **13:** "नूह" पाठ में कस भाव से रोते थे?

A) बाढ़ की तबाही को देखकर

B) घायल वुफत्ता के दुख को समझकर

C) अपनापन खो देने से

D) अपनों के तिरस्कार से

उत्तर: **B)** घायल वुफत्ता के दुख को समझकर

प्रश्न **14:** पाठ में उदाहरण के रूप में दी गई महाभारत की घटना में वुफत्ता का प्रतिनि धत्व कस रूप में है?

A) यु धष्ठिर के अंदर का अकेलापन

B) भीम की शक्ति

C) अर्जुन का धनुष

D) कृष्ण का सारथी

उत्तर: **A)** यु धष्ठिर के अंदर का अकेलापन

प्रश्न **15:** लेखक की माँ ने कबूतरों पर जिस घटना का दुख जताया, वह क्या थी?

A) कबूतरों को गाना रोकने का

B) दो में से एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था

C) कबूतरों ने पेड़ तोड़ डाला था

D) कबूतरों ने कताबों पर मल दिया था

उत्तर: **B)** दो में से एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था

प्रश्न **16:** पाठ में समुद्र के गुस्से का उदाहरण कस वर्ष मुंबई में देखा गया?

A) पंद्रह साल पहले

B) पच्चीस साल पहले

C) पैंतीस साल पहले

D) पचास साल पहले

उत्तर: **A)** पंद्रह साल पहले

प्रश्न **17:** पाठ में “दोस्त की मौजूदगी” का संकेत कस कहानी द्वारा दिया गया?

A) नूह का घायल वुफत्ता

B) सुलेमान और चींटियाँ

C) महाभारत में यु धष्ठिर और वुफत्ता

D) शेख अयाश के पता की ममता

उत्तर: **C)** महाभारत में यु धष्ठिर और वुफत्ता

प्रश्न **18:** पाठ में बताया गया क पेड़-पौधे और प क्षयों का हटना कसका परिणाम है?

A) मानव जाति की बढ़ती सहिष्णुता

B) मानव जाति की आशाओं का पूरा होना

C) प्रकृति के असंतुलन का परिणाम

D) आ र्थक समृद् ध का परिणाम

उत्तर: **C)** प्रकृति के असंतुलन का परिणाम

प्रश्न **19:** पाठ से मुख्य संदेश क्या मलता है?

A) केवल इंसान की तरक्की ज़रूरी है

B) दूसरे के दुख से दुखी होना और सभी जीवों के प्रति दया भाव रखना

C) जीवों को नुकसान पहुँचाना आवश्यक है

D) प्रकृति का दोहन करके समाज खुशहाल होगा

उत्तर: **B)** दूसरे के दुख से दुखी होना और सभी जीवों के प्रति दया भाव रखना

प्रश्न **20:** पाठ के अनुसार, जब इंसान ने प्रकृति की सहनशक्ति पार की, तो परिणामस्वरूप क्या बढ़ गया?

A) हरियाली और प्राकृतिक सौंदर्य

B) आपदाएँ—तूफ़ान, बाढ़, और नये रोग

C) सामाजिक सौहार्द

D) इंसानी खुशी और समृद् ध

उत्तर: **B)** आपदाएँ—तूफ़ान, बाढ़, और नये रोग

पाठ 12 निदा-फ़ाज़ली (अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले) पर आधारित (सही या गलत)

- मानव ने पृथ्वी को अपनी जागीर बना कर सभी अन्य जीवों को दर-ब-दर कया।

उत्तर: (सही)

- सुलेमान ने चींटियों को डराने के लए कहा क उनका कला आ रहा है।

उत्तर: (गलत)

- शेख़ अयाश के पता ने काले चयोंटे को अपने भोजन के साथ खलाया।

उत्तर: (गलत)

- नूह ने एक घायल वुफत्ता को गंदा कहकर भगा दिया।

उत्तर: (गलत)

- महाभारत में यु धष्ठिर का प्रतीकात्मक साथी एक कुत्ता था, जिसे वुफत्ता के रूपक से दर्शाया गया।

उत्तर: (सही)

- समुद्र ने एक रात में मुंबई के तीन जहाज़ों को कनारे फेंक दिया।

उत्तर: (सही)

- वर्सोवा पहले एक घना जंगल और परिंदों का घर हुआ करता था।

उत्तर: (सही)

- निदा-फ़ाज़ली की माँ ने कबूतरों के एक भी अंडे को बचाया।

उत्तर: (गलत)

- वुफत्ता पाठ में एक प्रकार का कीट-जीव है।

उत्तर: (सही)

- सुलेमान को सभी छोटे-बड़े पशु-प क्षयों का रखवाला माना गया था।

उत्तर: (सही)

- 'दीवारों के बीच' और 'दीवारों के पार' निदा-फ़ाज़ली की क वताएँ हैं।

उत्तर: (गलत)

- नूह रोते थे क्यों क उन्होंने एक घायल वुफत्ता को निष्पक्ष दृष्टि से देखा था।

उत्तर: (सही)

- पाठ में कहा गया है क इंसान ने प्रकृति के असंतुलन का कारण स्वयं बना लया।

उत्तर: (सही)

- उस घटना में समुद्र ने बच्चों के खलौने की तरह एक ही जहाज़ को तीन टुकड़ों में तोड़ दिया था।

उत्तर: (गलत)

- वुफ्ता शब्द का उल्लेख मानव और प्रकृति के बीच उत्पन्न दूरी के उदाहरण के रूपक में हुआ है।

उत्तर: (सही)

- वर्सोवा में अब भी पहले की तरह पेड़-पौधे और जानवर बिना कसी नुकसान के रहते हैं।

उत्तर: (गलत)

- पाठ में बताया गया क इंसान ने अपनी बढ़ती आबादी के कारण पेड़ों को हटाना शुरू कर दिया।

उत्तर: (सही)

- शेख़ अयाश के पता ने काले चयोंटे को कोई सहारा नहीं दिया और घर में ही छोड़ दिया।

उत्तर: (गलत)

- पाठ का मुख्य संदेश है क मानव को अन्य जीवों के दुख से दुखी होना चाहिए।

उत्तर: (सही)

- समुद्र की लहरों ने मुंबई में तीन जहाज़ों को एक साथ समुद्र में डुबो दिया।

उत्तर: (गलत)

पाठ 12 निदा-फ़ाज़ली (अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले) पर आधारित रिक्त स्थान भरिए -

- निदा-फ़ाज़ली का जन्म __________ **(12 अक्टूबर 1938)** को दिल्ली में हुआ था।
- निदा-फ़ाज़ली का बचपन __________ **(ग्वा लयर)** में बीता।
- निदा-फ़ाज़ली की पहली क वता-संग्रह थी __________ **(लफ़्ज़ों का पुल)**।
- निदा-फ़ाज़ली को 1999 में __________ **(साहित्य अकादेमी पुरस्कार)** मला।
- "खोया हुआ सा वजूद" __________ **(ग़ज़ल संग्रह)** है।

- निदा-फ़ाज़ली की आत्मकथा के पहले खंड का शीर्षक था ___________ (दीवारों के बीच)।
- निदा-फ़ाज़ली की आत्मकथा के दूसरे खंड का शीर्षक था ___________ (दीवारों के पार)।
- निदा-फ़ाज़ली का निधन ___________ (8 फरवरी 2016) को मुंबई में हुआ।
- पाठ के अनुसार मानव ने पृथ्वी को अपनी ___________ (जागीर) बना लया।
- सुलेमान ने चींटियों को आश्वासन दिया क ___________ (ख़ुदा ने सबका रखवाला बनाया है)।
- शेख़ अयाश के पता ने एक काला ___________ (चींटा) घर से हटाकर बाहर छोड़ा।
- नूह ने घायल ___________ (वुफत्ता) को पहले गंदा कहा फर पछताकर रोते रहे। ("वुफत्ता" का अर्थ है "कुत्ता")
- महाभारत में यु धष्ठिर का प्रतीकात्मक साथी एक ___________ (कुत्ता) था।
- समुद्र ने एक रात में मुंबई के ___________ (तीन जहाज़ों) को कनारे फेंका।
- वर्सोवा पहले एक ___________ (जंगल) हुआ करता था।
- निदा-फ़ाज़ली अपनी क वताओं में ___________ (आम बोलचाल की भाषा) का प्रयोग करते थे।
- पाठ में बताया गया क मानव ने पेड़ों को हटाकर ___________ (परिंदों) का घर छीना।
- पाठ में व र्णत समुद्री तूफ़ान ने ___________ (वर्ली, बांद्रा और गेट-वे ऑफ इं डया) के जहाज़ों को फैलाया।
- शेख़ अयाश की माँ ने टूटे अंडों के कारण पूरे दिन ___________ (नमाज़ पढ़ी) और रोईं।
- पाठ का मुख्य संदेश है क इंसान को दूसरे के दुख से ___________ (दुखी) होना चाहिए।